रजिस्ट्री सं० डी-222 REGISTERED No. D-222

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 51] नई दिल्ली, शनिवार, दिसम्बर 16, 1972 (अग्रहायण 25, 1894)
No. 51] NEW DELHI, SATURDAY, DECEMBER 16, 1972 (AGRAHAYANA 25, 1894)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

नोटिस
(NOTICE)

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 15 फरवरी 1972 तक प्रकाशित किये गये हैं :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 15th February 1972 :—

अंक Issue No.	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
1	2	3	4

शून्य
—NIL—

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांग-पत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on Indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1227
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	2005
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	143
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1763
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्ट	—
भाग II—खंड 3—उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं)	—
भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं	—
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	—
भाग III—खंड 1—महालेखा परीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	1731
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	377
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	—
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल हैं	1827
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें	245
पूरक संख्या 51—	
9 दिसम्बर, 1972 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट	2487
18 नवम्बर 1972 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु सम्बन्धी आंकड़े	2497

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1227
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	2005
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	143
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence	1763
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB.-SEC. (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	—
PART II—SECTION 3.—SUB.SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	—
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence	—
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	1731
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta	377
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	—
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1827
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	245
SUPPLEMENT No. 51	
Weekly Epidemiological Reports for week-ending 9th December, 1972	2487
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week ending 18th November, 1972	2497

भाग I—खण्ड 1

(PART I—SECTION 1)

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विविधतर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 2 दिसम्बर 1972

शुद्धि-पत्र

सं० 122-प्रेज/72 **शुद्धिपत्र**—दिनांक 22 मई, 1971 के भारतीय राजपत्र के भाग 1, खण्ड 1 में प्रकाशित इस सचिवालय की अधिसूचना संख्या 27-प्रेज/71, दिनांक 26 जनवरी, 1971 के हिन्दी रूपान्तर में शुद्धि करने हेतु :—

वास्ते : "कैप्टन रोनाल्ड लीन्सडले पेरीरा"

पढ़ें : "कैप्टन रोनाल्ड लीन्सडेल पेरेरा"

दिनांक 4 दिसम्बर 1972

सं० 123-प्रेज/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में उत्कृष्ट वीरता के लिए "महावीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:—

1. ब्रिगेडियर कैलाश प्रसाद पाण्डे (आई० सी०-4128) आर्टिलरी रेजिमेंट

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान ब्रिगेडियर कैलाश प्रसाद पाण्डे एक माउंटेन ब्रिगेड की कमान कर रहे थे। उस ब्रिगेड को पूर्वी क्षेत्र में शत्रु का एक अच्छी तरह किलाबन्द ठिकाने से सफाया करने का काम सौंपा गया था। मुख्यतया ब्रिगेडियर पाण्डे के प्रेरणाप्रद नेतृत्व के कारण इस कार्य को सफलतापूर्वक पूरा किया जा सका। अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना, वे सर्वथा युद्ध में आगे रहकर सैनिकों को प्रोत्साहित करते हुए, युद्ध का संचालन करते रहे। इनके ब्रिगेड को अनेकों महत्वपूर्ण तथा कठिन कार्य सौंपे गए, उन्हें भी इन्होंने सफलतापूर्वक पूरा किया। ब्रिगेड ग्रुप ढंग से शत्रु पर दबाव डाल कर उसकी महत्वपूर्ण चौकियों पर कब्जा करते हुए 72 घंटों में चालीस मील आगे बढ़ा। जब इनका ब्रिगेड मैनमति के भीतर पहुंचा तो शत्रु ने उस पर टैंकों के साथ जोरदार आक्रमण कर दिया। शत्रु के निरन्तर दबाव के बावजूद वह ब्रिगेड उस समय तक अपने मोर्चों पर डटा रहा जब तक शत्रु कमांडर ने आत्मसमर्पण नहीं किया।

आद्योपान्त ब्रिगेडियर कैलाश प्रसाद पाण्डे ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व, एवं कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. लेफ्टिनेन्ट कर्नल नरिन्दर सिंह संधू (आई० सी०-6638) डोगरा रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

5/6 दिसम्बर, 1971 की रात्रि को लेफ्टिनेन्ट कर्नल नरिन्दर सिंह संधू को, जो डोगरा रेजिमेंट की एक बटालियन की कमान कर रहे थे, पश्चिमी क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने पर कब्जा करने का कार्य सौंपा गया था। शत्रु ने अपने मोर्चों को जिन्हें सुरंग से जोड़ा हुआ था, पिल बाक्सों, मशीन-गनों तथा टैंक भेदी उपकरणों की सहायता से सुदृढ़ किया हुआ था। शत्रु द्वारा रक्षित क्षेत्र पर कब्जा करना बहुत ही कठिन कार्य था। आक्रमण के दौरान लेफ्टिनेन्ट कर्नल संधू पूरे मार्ग पर सब से आगे रहे। जैसे ही लक्ष्य पर कब्जा हुआ, ये पुनर्गठन के कार्य में मार्ग दर्शन तथा सहायता के लिए स्वयं वहां उपस्थित रहे। टांग में गोली से घाव हो जाने के बावजूद भी अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना लगातार अपने जवानों का नेतृत्व करते रहे।

इस संक्रिया में, लेफ्टिनेन्ट कर्नल नरिन्दर सिंह संधू ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

3. लेफ्टिनेन्ट कर्नल अरुणा भीमराव हरोलिकर (आई० सी०-7916)
5वीं गोरखा राइफल्स

लेफ्टिनेन्ट कर्नल अरुणा भीमराव हरोलिकर को, जो गोरखा राइफल की 5वीं बटालियन की कमान कर रहे थे, पूर्व क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने पर कब्जा करने का कार्य सौंपा गया था। शत्रु ने तमाम पहुंच मार्गों पर सैनिकों की दो कम्पनियां तैनात करके अपनी स्थिति काफी सुदृढ़ कर रखी थी। जब प्रहार करने वाली हमारी दो कम्पनियां शत्रु की भारी गोलीबारी के कारण आगे न बढ़ सकीं तो लेफ्टिनेन्ट कर्नल हरोलिकर ने अपनी शेष बटालियन को लेकर एक दुर्गम मार्ग से शत्रु पर पीछे से आक्रमण किया। शत्रु के ठिकाने को अपने कब्जे में करने के लिए इन्होंने स्वयं आमने सामने की लड़ाई लड़ी और मुख्यतया इनकी कार्य कुशलता के कारण शत्रु के इस ठिकाने पर बटालियन का कब्जा हो सका। इस ठिकाने पर कब्जा हो जाने के फलस्वरूप पाक अधिकृत एक बड़ा क्षेत्र मुक्त किया जा सका और ब्रिगेड

ग्रुप को भी आगे कार्यवाही करने में सुविधा हुई। बाद में की गई संक्रियाओं के दौरान इन्होंने शत्रु के एक और ठिकाने पर कब्जा किया। 7 दिसम्बर, 1971 को हैलिकाप्टरों द्वारा सिलहट में इनकी बटालियन उतारे जाने के बाद इनके सुरक्षात्मक ठिकाने पर शत्रु ने बड़े समन्वित ढंग से प्रत्याक्रमण किये। इन्होंने शत्रु आक्रमणों को तब तक पीछे धकेले रखा जब तक कि ब्रिगेड की सम्पर्क व्यवस्था पूरी नहीं हो गई। इनके प्रेरणाप्रद नेतृत्व में बटालियन द्वारा दृढ़तापूर्वक की गई कार्यवाही से शत्रु का हौसला पस्त हो गया और शत्रु के समग्र गैरीजन के कई हजार सैनिकों ने शीघ्र आत्मसमर्पण कर दिया।

आद्योपान्त संक्रियाओं में लेफ्टिनेंट कर्नल अरुणा भीमराव हरोलिकर ने अति उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

सं० 124-प्रेज/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में वीरता के लिए "वीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:—

1. लेफ्टिनेन्ट कर्नल अमरजीत सिंह ग्रार (आई० सी०-7814)
राजपूताना राइफल्स

दिसम्बर, 1971 में, पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं में लेफ्टिनेन्ट कर्नल अमरजीत सिंह ग्रार को, जो राजपूताना राइफल्स की एक बटालियन की कमान कर रहे थे, पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक महत्वपूर्ण ठिकाने पर कब्जा करने का कार्य सौंपा गया था। विषम परिस्थितियों के बावजूद कार्यवाही को सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया गया और शत्रु के भयानक जवाबी आक्रमण के बावजूद मोर्चे पर कब्जा बनाये रखा। 6 सिदम्बर, 1971 को बटालियन ने शत्रु को आश्चर्य में डालकर एक भी गोली चलाए बिना उसे उस स्थान से खदेड़ दिया और पास की हमारी एक सैनिक टुकड़ी ने उस पर अपना कब्जा कर लिया: पुनः 9 दिसम्बर, 1971 को बटालियन ने मेनामती के मोर्चों पर अपना अधिकार कर दिया और वह शत्रु के भयानक टैंकों सहित जवाबी आक्रमणों के बावजूद वहां कब्जा बनाये रखा।

आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट कर्नल अमरजीत सिंह ग्रार ने उच्च-कोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. मेजर महमूद हसन खान (आई० सी०-18691)
ग्रेनेडियर्स

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 6 दिसम्बर, 1971)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान मेजर महमूद हसन खान को, जो ग्रेनेडियर्स बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे, जम्मू तथा कश्मीर क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने पर धावा करने का कार्य सौंपा गया था। इसके लिए इन्हें शत्रु सैनिकों से पूरी तरह रक्षित क्षेत्र से होकर गुजरना था और शत्रु की एक प्लाटून के लक्ष्य को विध्वंस करना था। मेजर महमूद हसन खान अपने जवानों को साथ लेकर बड़ी सूझबूझ और कुशलता के साथ एक के बाद दूसरी चौकी को नष्ट करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़े और 12 घंटे के लगातार संघर्ष के बाद इस कार्यवाही में सफलता प्राप्त हुई।

इस कार्यवाही में मेजर महमूद हसन खान ने वीरता तथा नेतृत्व का परिचय दिया और ये भारतीय सेना की उच्च-त्तम परम्पराओं के अनुरूप कर्त्तव्य के बलिवेदी पर स्वयं बलिदान हो गए।

3. मेजर तरसेम लाल शर्मा (आई० सी०-20832)
राजपूत रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 दिसम्बर, 1971)

मेजर तरसेम लाल शर्मा को, जो राजपूत रेजिमेंट की एक बटालियन के साथ थे, पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने पर कब्जा करने का कार्य सौंपा गया था। इन्होंने शत्रु पर अचानक टूट कर उसे पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। शत्रु की काफी बड़ी शक्ति से मुकाबला करते हुए वे आगे बढ़ते रहे। इनके इस आक्रमण से शत्रु ने भयातुर हो कर एक पुल उड़ा दिया जिससे उनकी एक बटालियन और एक इन्फैन्ट्री डिवीजन का मुख्य हैडक्वार्टर नदी के इस पार हमारी तरफ रह गया। कुछ ही देर के बाद शत्रु ने दो टैंकों को लेकर जवाबी आक्रमण किया। मेजर शर्मा उस समय तक अपने मोर्चों पर डटे रहे जब तक कि उन्हें मशीनगन की एक गोली न लगी और जिसके परिणामस्वरूप वे वीरगति को प्राप्त न हुए।

इस कार्यवाही में, मेजर तरसेम लाल शर्मा ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

4. मेजर ललित मोहन भाटिया (आई० सी०-16165)
राजपूत रेजिमेंट

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—14 दिसम्बर, 1971)

13/14 दिसम्बर की रात्रि को मेजर ललित मोहन भाटिया को, जो राजपूत रेजिमेंट की एक बटालियन के साथ थे, फाजिल्का क्षेत्र में एक पाकिस्तानी बाहरी चौकी पर कब्जा करने का कार्य सौंपा गया था। जैसे ही वे अपनी कम्पनी का निर्धारित लक्ष्य की ओर संचालन कर रहे थे, कि शत्रु ने हल्के तथा भारी स्वचालित हथियारों से इन पर गोलाबारी कर दी। इन्होंने बड़ी निर्भीकता से शत्रु पर धावा बोल कर उसके दो सैनिकों को संगीन से मार गिराया और उसकी हल्की मशीनगन बंकर को निष्क्रिय कर दिया। इस आमने-सामने की मुठभेड़ में उन्हें शत्रु के बैनट से घातक चोट लगी। इनके व्यक्तिगत उदाहरण से प्रेरित होकर इनकी कम्पनी विजयी हुई और उसमें शत्रु के दो टैंक तथा भारी मात्रा में शस्त्र, गोला बारूद, और उपस्कर अपने कब्जे में किए और दो अफसरों सहित कुछ सैनिकों को बन्दी बनाया।

इस कार्यवाही में मेजर ललित मोहन भाटिया ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

5. मेजर अम्लान प्रताप दत्ता (आई० सी०-12859)
9वीं गोरखा राइफल्स

मेजर अम्लान प्रताप दत्ता 9वीं गोरखा राइफल्स की उस कम्पनी की कमान कर रहे थे, जिसने पूर्वी क्षेत्र के एक इलाके पर आक्रमण किया था। आक्रमण आरम्भ करने के स्थान की ओर जब ये आगे बढ़ रहे थे तो शत्रु की भारी गोलाबारी के कारण मेजर दत्ता की दो प्लाटूनें दाहिनी ओर पड़ गईं और उनका रेडियो संपर्क टूट गया। फिर भी ये अपनी कम्पनी हैडक्वार्टर तथा तीसरे प्लाटून के साथ आगे बढ़े। जब शत्रु के छोटे हथियारों से होने वाली गोलाबारी के कारण मेजर दत्ता की कम्पनी की आगे बढ़ने की गति धीमी पड़ने लगी तो मेजर दत्ता ने शत्रु के ठिकानों पर धावा बोल दिया। इसके इनके जवानों के हौसले बढ़े और वे बड़े जोश के साथ शत्रु पर टूट पड़े। इस कार्यवाही ने शत्रु को मोर्चा छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया।

इस कार्यवाही में मेजर अम्लान प्रताप दत्ता ने उच्च-कोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

6. मेजर सुरिन्दर सिंह जमवाल (आई० सी०-14374),
डोगरा रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—16 दिसम्बर 1971)

16 दिसम्बर 1971 को पूर्वी क्षेत्र के एक स्थान में डोगरा रेजिमेंट की एक बटालियन को शत्रु की मोर्चाबन्दी समाप्त करने का काम सौंपा गया था। इस हमले में मेजर सुरिन्दर सिंह जमवाल कम्पनी की कमान कर रहे थे। शत्रु की तोपों और छोटे हथियारों की भारी गोलाबारी के बावजूद ये अपने जवानों के साथ आगे बढ़े। शत्रु की एक कम्पनी को रौंद डालने के बाद इन्हें शत्रु के एक और मोर्चे से जूझना पड़ा, जहां से काफी गोलाबारी हो रही थी। उनके काफी सैनिकों के हताहत होने से संख्या कम हो जाने के बावजूद भी मेजर जमवाल ने अपने शेष जवानों को जुटा कर शत्रु के उस ठिकाने पर आक्रमण शुरू कर दिया। इन्होंने इस ठिकाने पर धावा बोल कर उसे रौंद डाला और भारी संख्या में पाकिस्तानी सैनिकों को बन्दी बनाया।

इस कार्यवाही में मेजर सुरिन्दर सिंह जमवाल ने उच्च-कोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

7. मेजर बलदेव राज भोला (एस० एस०-18854),
डोगरा रेजिमेंट।

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—16 दिसम्बर 1971)

मेजर बलदेव राज भोला को, जो डोगरा रेजिमेंट की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे, पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक सुदृढ़ ठिकाने पर आक्रमण करने का आदेश दिया गया था। आगे बढ़ते समय कम्पनी शत्रु के तोपखाने और भारी मशीनगन से होने वाली भारी एवं कारगर गोलाबारी के बीच आ गई। मेजर बलदेव राज भोला के प्रेरणाप्रद नेतृत्व में कम्पनी अनेक कठिनाइयों के बावजूद आगे बढ़ती रही। मेजर बलदेव राज भोला घायल हो गये फिर भी वे बड़ी निर्भीकता से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे। जैसे ही वे अपने लक्ष्य के निकट पहुंचे वैसे ही शत्रु की एक भारी मशीनगन की गोलाबारी ने उनका आगे बढ़ना असम्भव कर दिया। स्थिति का तुरन्त जायजा लेकर मेजर बलदेव राज भोला ने उस मशीनगन को निष्क्रिय करने का निश्चय किया और तदनुसार कार्रवाई की। ये मशीनगन के ठिकाने की ओर लपके और उस पर दो ग्रेनेड फैंक कर उसे निष्क्रिय कर डाला। ऐसा करते हुए वे शत्रु की गोलाबारी से घायल हो गये जिससे वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में मेजर बलदेव राज भोला ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

8. मेजर केलियाना लुशाई (आई० सी०-17484),
कुमाऊं रेजिमेंट।

मेजर केलियाना लुशाई को, जो कुमाऊं रेजिमेंट की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे, पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक सुदृढ़ ठिकाने पर, जहां बंकरों का जाल बिछा हुआ था, कब्जा करने का आदेश मिला। आक्रमण से पूर्व रात्रि को ये शत्रु के मोर्चों तक रेंगते हुए गए और शत्रु के चौकस रहने के बावजूद भी इन्होंने वहां की सारी स्थिति को आंका। अगली रात्रि को शत्रु के ठिकाने पर आक्रमण के लिए अपनी कम्पनी का नेतृत्व किया। शत्रु ने भारी तोपों और मशीनगनों से कम्पनी पर गोलाबारी की। यद्यपि मेजर लुशाई की टांग तथा बाजू में घाव लग गए थे फिर भी ये अपने जवानों को उत्साहित करते रहे और 11 घंटे की निरन्तर लड़ाई के बाद शत्रु की मुख्य रक्षा व्यवस्था के महत्वपूर्ण स्थल पर अपना पांव जमाने में सफल हुए। शत्रु ने उन्हें उखाड़ फेंकने के लिए कई बार आक्रमण किये लेकिन मेजर लुशाई के कुशल नेतृत्व के कारण सभी प्रयास विफल कर दिए गए।

इस कार्यवाही में मेजर केलियाना लुशाई ने उच्च-कोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

9. मेजर नरिन्दर कुमार शर्मा (आई० सी०-22596),
कुमाऊं रेजिमेंट।

दिसम्बर 1971 में पूर्वी क्षेत्र में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान मेजर नरिन्दर कुमार शर्मा, जो कुमाऊं रेजिमेंट की एक बटालियन के साथ थे, बटालियन के सब से आगे जाने वाले दल का नेतृत्व कर रहे थे। शत्रु की कारगर गोलाबारी के कारण यह दल आगे न बढ़ सका। मेजर शर्मा ने शत्रु की सही स्थिति का पता लगाने के बाद एक इतना बड़ा काम हाथ में लिया जिसे सामान्यतः मेजर शर्मा की कमान के अधीन कार्य करने वाले दल से अपेक्षा नहीं की जा सकती थी। इन्होंने संक्रिया की ऐसी सफल योजना बनाई और इतनी खूबी के साथ कार्यवाही की कि शीघ्र ही शत्रु के ठिकाने का एक भाग कम्पनी के कब्जे में आ गया। ये अपने जवानों को साथ लेकर तब एक बंकर से दूसरे बंकर में जा-जा कर उन्हें निष्क्रिय करते गए जब तक कि एक रुकावट के कारण उनका आगे बढ़ना असम्भव नहीं हो गया। शीघ्र ही टैंकों को शत्रु के शेष ठिकाने

का सफाया करने का आदेश दिया गया । टैंकों का कार्य सुगम और शीघ्रता से पूर्ण करने के लिए मेजर शर्मा ने शत्रु की तोपों और छोटे हथियारों की गोलाबारी की चिन्ता किये बिना, खुले में आकर टैंकों का निर्देशन किया।

इस कार्रवाई में, मेजर नरिन्दर कुमार शर्मा ने उच्च-कोटि की वीरता, नेतृत्व व्यावसायिक कुशलता तथा कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

10. मेजर विनोद भनोट (आई०सी०-15906)
3री गोरखा राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—16 दिसम्बर 1971)

दिनांक 16/17 दिसम्बर 1971 की रात को विनोद भनोट को, जो 3री गोरखा राइफल्स बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे, कारगिल क्षेत्र की एक शत्रु चौकी पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था । इन्होंने उस चौकी तक पहुंचने के लिए पीछे की ओर से एक दुर्गम और अप्रत्याशित मार्ग चुना। इनका दस्ता दुर्गम भू-भाग के कारण बड़ी धीमी गति से आगे बढ़ रहा था। आगे बढ़ती हुई इस टुकड़ी पर शत्रु ने भारी गोलाबारी की, किन्तु इनके प्रेरणप्रद नेतृत्व में दस्ता आगे बढ़ता गया। चौकी के निकट पहुंचने पर, मेजर भनोट तेजी से उस मशीनगन चौकी की ओर बढ़े, जो इन्हें आगे बढ़ने में सब से ज्यादा रुकावट डाल रही थी, और अकेले ही उन्होंने उसे निष्क्रिय कर डाला। इस प्रकार वहां अपना पांव जमा कर ये बड़ी तेजी से आगे बढ़े, और भीषण लड़ाई के बाद चौकी पर कब्जा कर लिया। यद्यपि ये पूरी तरह थक चुके थे फिर भी, इन्होंने शत्रु की आस-पास की सभी चौकियों पर भी कब्जा कर लिया।

इस कार्रवाई में मेजर विनोद भनोट ने उच्च-कोटि की वीरता, नेतृत्व और कर्तव्य परायणता का परिचय दिया है।

11. मेजर अप्पासाहेब दादासाहेब सूर्वे (आई० सी०-13403), 9वीं गोरखा राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 दिसम्बर 1971)

मेजर अप्पासाहेब दादासाहेब सूर्वे गोरखा राइफल्स की उस कम्पनी की कमान कर रहे थे जो कि शकरगढ़ युद्ध में चतराना क्षेत्र पर आक्रमण की प्रथम प्रावस्था में दाहिनी ओर से आगे बढ़ने वाली कम्पनी थी। वे अपनी जान की तनिक भी परवाह न करके साहस के साथ अपनी कम्पनी को आगे ले गए और शत्रु के भली प्रकार समन्वितरूप से सुरक्षित ठिकानों को, जिनमें अनेक मशीनगन बंकर तथा सुरंग क्षेत्र शामिल थे, अपने कब्जे में किया। शत्रु की ओर से दो बार तीव्र जवाबी आक्रमण होने और भारी संख्या में उनके सैनिकों के हताहत होने के बावजूद भी वे अपनी जगह पर डटे रहे। 15 दिसम्बर 1971 को 0200 बजे उस स्थान के असुरक्षित होने पर कमान अफसर ने इन्हें वहां से निकल जाने का आदेश दिया। जब इनकी कम्पनी उस स्थान को खाली कर रही थी तो ये वहां पर बने रहे और अपनी कम्पनी की सुरक्षा के लिए स्वयं बचाव फायर करते रहे। इसी समय शत्रु की मशीनगन से इनकी जांघ में गोली लगी और ये गम्भीर रूप से घायल हो गए। इन्होंने शत्रु को उस समय तक उलझाए रखा जब तक कि इनके जवान वहां से निकल नहीं गए। अपनी अल्पसंख्या शक्ति और शत्रु की ओर से भारी गोलाबारी होने के बावजूद इन्होंने अपने व्यक्तिगत साहस और दृढ़ता का परिचय देकर अपने जवानों में उद्देश्य पूर्ति के लिए अपने स्थानों पर दृढ़ता से डटे रहने की भावना पैदा की।

इस कार्रवाई में, मेजर अप्पासाहेब दादासाहेब सूर्वे ने उच्च-कोटि की वीरता तथा नेतृत्व शक्ति का परिचय दिया।

12. कैप्टन प्रशान्त कुमार घोष (आई० सी०-15842), सिग्नल्स

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, कैप्टन प्रशान्त कुमार घोष को, पूर्वी क्षेत्र में एक कठिन कार्य सौंपा गया था जिसे इन्होंने बड़ी सफलता के साथ पूरा किया। इन्होंने शत्रु के मार्ग पर बाधाएं खड़ी की और उसकी गाड़ियों के बहुत से काफिलों को रोककर उसके सैनिकों तथा साज-सामान को भारी क्षति पहुंचाई जिससे शत्रु सैनिकों को सुगमता से आगे बढ़ने में बड़ी कठिनाई हुई।

आद्योपान्त, कैप्टन प्रशान्त कुमार घोष ने उच्च-कोटि की वीरता, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

13. कैप्टन कुलदीप सिंह राठी (आई० सी०-19844), जाट रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

दिसम्बर 1971 में, पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कैप्टन कुलदीप सिंह राठी, जाट रेजिमेंट की उस बटालियन के एडजुटेंट थे, जो पूंछ सेक्टर में एक महत्वपूर्ण मोर्चा सम्भाले हुए थी। शत्रु ने उस पर भारी दबाव डाल रखा था और उस पर प्रहार करना चाहता था। कैप्टन कुलदीप सिंह राठी ने मुट्ठी भर जवानों को साथ लेकर आगे बढ़ते हुए शत्रु के एक दस्ते पर एक ओर से प्रहार किया। इस साहसपूर्ण कार्यवाही से शत्रु का आक्रमण विफल हो गया। शत्रु ने फिर से आक्रमण की योजना बनाई और हमारे उस मोर्चे पर भारी गोलाबारी की, शत्रु के इस आक्रमण को विफल करने के उद्देश्य से, कैप्टन राठी एक खाई से दूसरी खाई में जाकर अपने जवानों को उत्साहित करते रहे। ऐसा करते हुए शत्रु का एक गोला उन पर आ लगा और वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में कैप्टन कुलदीप सिंह राठी ने उच्च-कोटि की वीरता, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

14. कैप्टन शिव गणेश सिंह (आई० सी०-18968), आर्टिलरी

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 दिसम्बर 1971)

कैप्टन शिव गणेश सिंह, डोगरा रेजिमेंट की उस बटालियन के साथ प्रेक्षण चौकी अफसर के रूप में तैनात थे, जिसे पश्चिमी क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान पर कब्जा करने का आदेश दिया गया था। आक्रमण के प्रारम्भ में ही शत्रु ने इस बटालियन पर

तोपों और मशीनगनों से कारगर गोलाबारी की। कैप्टन शिव गणेश सिंह ने अपनी जान की परवाह किए बिना एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर शत्रु की तोपों को निष्क्रिय किया। यद्यपि वे घायल हो गए थे फिर भी अपना काम उस समय तक बखूबी ढंग से करते रहे जब तक कि वे घातक रूप से घायल नहीं हो गए।

इस कार्यवाही में कैप्टन शिव गणेश सिंह ने उच्च-कोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

15. कैप्टन धन सिंह अधिकारी (एस० एस०-22082), डोगरा रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 दिसम्बर 1971)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कैप्टन धन सिंह अधिकारी डोगरा रेजिमेंट की एक बटालियन के साथ तैनात थे। इन्हें पश्चिमी क्षेत्र में शत्रु के कुछ मोर्चों की सही स्थिति का पता लगाने का काम सौंपा गया था। अपनी जान हथेली पर लेकर वे रेंगते हुए शत्रु के मोर्चों के बहुत निकट पहुंचे और इतनी सही जानकारी वहां से ली कि उसके आधार पर शत्रु के ठिकाने पर आक्रमण करने की ठोस योजना बनाई जा सकी। आक्रमण के दौरान इस कम्पनी पर एक ओर से गोलाबारी करती हुई शत्रु की दो मझोली मशीनगनें हावी हो गई थी। कैप्टन अधिकारी बड़ी तेजी से उन मशीनगनों में से एक की ओर लपके और उसे निष्क्रिय बना दिया। इनकी इस कार्यवाही से शत्रु को चौकी छोड़नी पड़ी।

इस कार्यवाही में कैप्टन धन सिंह अधिकारी ने उच्च-कोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

16. कैप्टन उदय परशुराम साठे (आई० सी०-17386), आर्टिलरी

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 दिसम्बर 1971)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कैप्टन उदय परशुराम साठे, कुमाऊं रेजिमेंट की एक बटालियन के साथ प्रेक्षण अफसर के रूप में कार्य कर रहे थे। इस बटालियन को पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के कुछ ठिकानों पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद, इन्होंने खुले में आकर अपनी तोपों की गोलाबारी का निर्देशन किया। ज्योंही बटालियन अपने लक्ष्य के निकट पहुंची, गोलाबारी रोक दी गई और वे अपने दल के साथ आ मिले और शत्रु की कई चौकियां निष्प्रभाव कर दीं।

इस कार्यवाही में कैप्टन उदय परशुराम साठे ने उच्च-कोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

17. कैप्टन जगदीश चन्द्र गुसांई (आई० सी०-18321), आर्टिलरी

(मरणोपरान्त)

दिनांक 13/14 दिसम्बर, 1971 की रात को पश्चिमी क्षेत्र में, शत्रु द्वारा रक्षित एक क्षेत्र पर आक्रमण करने वाली अगली कम्पनी के साथ कैप्टन जगदीश चन्द्र गुसांई को एक आग्रती प्रेक्षण अफसर के रूप में नियुक्त किया गया था। सीमेंट और कंकरीट के बने बंकरों से होने वाली कारगर गोलाबारी के कारण आक्रमण में रुकावट हो गई थी। अतः कैप्टन जगदीश चन्द्र गुसांई ने अपनी तोप से शत्रु के बंकरों पर सीधी गोलाबारी कर दी। ऐसा करके इन्होंने अपने को ऐसे घातक क्षेत्र में झोंक दिया जहां अपने तथा शत्रु, दोनों के गोले बरस रहे थे। हवाई हमले के तुरन्त बाद, इन्होंने कम्पनी की कमान अपने हाथ में ली और 40 अन्य जवानों को साथ लेकर दिन में ही बंकरों पर आक्रमण बोल दिया।

इस कार्यवाही में, कैप्टन जगदीश चन्द्र गुसांई ने वीरता, नेतृत्व तथा दृढ़-शक्ति का परिचय दिया तथा भारतीय सेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप कर्त्तव्य की वेदी पर अपना जीवन बलिदान कर दिया।

18. कैप्टन जतिन्दर नाथ सूद (आई० सी०-21836), 5वीं गोरखा राइफल्स

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 दिसम्बर 1971)

कैप्टन जतिन्दर नाथ सूद उस प्लाटून की कमान कर रहे थे जिसे 7/8 दिसम्बर, 1971 की रात को पूर्वी क्षेत्र में पीरगंज में हमारी एक कम्पनी पर शत्रु द्वारा किए एक जवाबी आक्रमण को पीछे धकेलने में मदद देने के लिए भेजा गया था। अपनी गनों को ठीक स्थान पर तैनात कर ये आगे अपनी ही उन दो मझोली मशीन गन दस्तों तक भाग कर गए जिन पर शत्रु के मार्टर तथा छोटे शस्त्रों में से भारी गोलाबारी हो रही थी। इन्होंने स्वयं उन दस्तों का संचालन कर शत्रु को उलझाए रखा। 8 दिसम्बर, 1971 को प्रातः 5 बजे भारी दबाव पड़ने पर शत्रु सैनिक अपने कमांडिंग अफसर के साथ 20 गज तक रेंगते हुए आये और उन दो मझोली मशीन गनों के ठिकाने पर भीषण प्रहार किया तथा उनमें से एक को नष्ट करने में सफल हो गये। कैप्टन सूद, अपनी मशीनगन को भी खतरा अनुभव करने पर तुरन्त अपनी खाई से बाहर निकले और शत्रु पर प्रहार कर दिया। ऐसा करते समय इन्हें एक गोली आ लगी। इस वीरतापूर्ण कार्यवाही से इनकी मझोली मशीनगन बच गई और इनके साथी शत्रु के आक्रमण को विफल करने में सफल हो सके।

इस कार्यवाही में, कैप्टन जतिन्दर नाथ सूद ने उच्च-कोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

19. लेफ्टिनेन्ट मोहन सिंह (आई० सी०—19912) असम रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 दिसम्बर 1971)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान लेफ्टिनेन्ट मोहन सिंह असम रेजिमेंट की एक बटालियन के साथ तैनात थे। इनकी प्लाटून को अमृतसर क्षेत्र में शत्रु के एक मझोली मशीनगन ठिकाने पर कब्जा कर लेने का कार्य सौंपा गया था।

उस ठिकाने पर शत्रु सेना का एक पूरा सैक्शन तथा उस ने उस सारे इलाके में सुरंगें बिछाई हुई थीं। शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद भी, लेफ्टिनेन्ट मोहन सिंह ने अपनी जान की तनिक भी परवाह न कर अपने जवानों को लेकर अपने कार्य को सफलतापूर्वक पूरा किया। शत्रु की एक मझोली मशीनगन पर इन्होंने स्वयं ग्रेनेड फैंक कर उसे निष्प्रभावी किया।

इस कार्यवाही में, लेफ्टिनेन्ट मोहन सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

20. 2/लेफ्टिनेन्ट तमाल सत्यनारायण राय (आई० सी०—24594 इंजीनियर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 दिसम्बर, 1971)

2/लेफ्टिनेन्ट तमाल सत्यनारायण राय उस प्लाटून की कमान कर रहे थे जिसे पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक सुरक्षित ठिकाने पर आक्रमण करने के लिए की जाने वाली तैयारी के सिलसिले में गाड़ियों के लिए रास्ता बनाने का काम दिया गया था। निर्माण कार्य के दौरान ही शत्रु ने इस प्लाटून पर तोपखाने से भारी गोलाबारी कर दी। बड़े साहस के साथ और अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना अपने जवानों का नेतृत्व करते हुए इन्होंने अपना कार्य जारी रखा। जब प्लाटून आधा काम कर चुकी, तो शत्रु ने उस पर छोटे हथियारों तथा मझोली मशीनगन से भारी गोलाबारी कर दी। इन्होंने सुरंग क्षेत्र से होकर शत्रु की चौकी पर धावा बोल दिया और उसे निष्क्रिय कर डाला। और जीप पर रखी हुई एक रिकायल-लैस गन और एक मझोली मशीनगन को भी कब्जे में कर लिया। ये फिर रास्ता बनाने में लग गए और ठीक समय पर अपना काम पूरा कर दिखाया।

इस कार्यवाही में, 2/लेफ्टिनेन्ट तमाल सत्यनारायण राय ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

21. 2/लेफ्टिनेन्ट चन्द्र पाल (एस० एस०—22936) आरमर्ड कोर

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसम्बर, 1971)

2/लेफ्टिनेन्ट चन्द्र पाल एक सैन्यदल की कमान कर रहे थे, जिसे पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक सुदृढ़ ठिकाने पर प्रहार करने का कार्य सौंपा गया था। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना इन्होंने अपने टैंक को युद्ध क्षेत्र में सबसे आगे रखकर सुरंग क्षेत्रों से होकर शत्रु पर धावा बोल दिया। जब ये शत्रु के बंकर से अभी केवल 20 गज की दूरी पर ही थे तो इनके टैंक पर रिकायल-लैस गन का एक गोला आ लगा जिससे ये गम्भीर रूप से घायल हो गए। फिर भी निर्भीकता से ये टैंक से उतरे और शत्रु के बंकर की ओर दौड़े लेकिन उस बंकर के पास पहुंचते ही ये गिर पड़े।

इस कार्यवाही में, 2/लेफ्टिनेन्ट चन्द्र पाल ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

22. 2/लेफ्टिनेन्ट कुमुद कुमार (आई० सी०—25308) राजपूत रेजिमेंट

2/लेफ्टिनेन्ट कुमुद कुमार को, जो राजपूत रेजिमेंट की एक बटालियन की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे, पूर्वी क्षेत्र में एक सड़क अवरोध को साफ करने का आदेश दिया गया था। प्लाटून के आगे बढ़ने के दौरान शत्रु ने उस पर मझोली मशीनगन तथा हल्की मशीनगन से भारी गोलाबारी की। 2/लेफ्टिनेन्ट कुमुद कुमार शत्रु की एक मझोली मशीनगन के बंकर तक रेंगते हुए गए तथा उस में एक ग्रेनेड फेंक कर उसे निष्क्रिय कर दिया। इससे प्लाटून शत्रु के उस ठिकाने पर कब्जा कर सकी तथा सड़क अवरोध को हटाने में सफल हो सकी।

इस कार्यवाही में, 2/लेफ्टिनेन्ट कुमुद कुमार ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

23. 2/लेफ्टिनेन्ट मनोहर सिंह चौहान (एस० एस०—24349) 4थी गोरखा राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 दिसम्बर, 1971)

2/लेफ्टिनेन्ट मनोहर सिंह चौहान उस गोरखा राइफल्स बटालियन की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे जो पुंछ क्षेत्र में एक रक्षित इलाके में तैनात की हुई थी। इनकी प्लाटून उस इलाके तक पहुंचने वाले महत्वपूर्ण मार्ग की निगरानी कर रही थी। 3/4 दिसम्बर, 1971, की रात को शत्रु ने भारी संख्या में आक्रमण किया जिसका दबाव मुख्य रूप से इस प्लाटून पर पड़ा। शत्रु की तोपों, राकेटों और मझोली मशीनगनों से बरसती गोलियों के बीच 2/लेफ्टिनेन्ट चौहान एक खाई से दूसरी खाई में जाकर अपने जवानों को उत्साहित करते रहे। शत्रु ने इनके ठिकाने पर हावी होने के लिए बारम्बार प्रयास किया किन्तु इनके प्रेरणाप्रद नेतृत्व में इनकी प्लाटून ने शत्रु के आक्रमण विफल कर दिए।

इस कार्यवाही में, 2/लेफ्टिनेन्ट मनोहर सिंह चौहान ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

24. 2/लेफ्टिनेन्ट देवपाल सिंह बी देवल (एस० एस० 23766) 5वीं गोरखा राइफल्स (मरणोपरान्त)

2/लेफ्टिनेन्ट देवपाल सिंह बी देवल सिलहट क्षेत्र में शत्रु की एक चौकी पर आक्रमण के दौरान 5वीं गोरखा राइफल्स की बटालियन की एक अग्रिम प्लाटून की कमान कर रहे थे। चौकी की भलीभांति किलाबंदी की हुई थी। शत्रु ने तोपों और मझोली मशीनगन से प्लाटून पर भारी एवं सही गोलाबारी की। निर्भयतापूर्वक इन्होंने आक्रमण जारी रखा और अपने जवानों को प्रेरित करते हुए, एक के बाद एक बंकर को निष्प्रभावी करते रहे जब तक कि शत्रु अन्ततः निष्क्रिय नहीं हो गए। बाद की एक कार्यवाही में वे घायल हो गए परन्तु फिर भी तब तक लड़ते रहे जब तक कि घावों के कारण वीरगति को प्राप्त नहीं हो गए।

इन कार्यवाहियों में, 2/लेफ्टिनेन्ट देवपाल सिंह बी देवल ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

25. जे० सी०-30557 सूबेदार पल्लाद सिंह,
जाट रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

5 दिसम्बर, 1971 को सूबेदार पल्लाद सिंह एक कम्पनी की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे जिसे पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक इलाके पर कब्जा करने का आदेश दिया गया था। उस इलाके में बंकरों का जाल बिछा हुआ था और उस पर कब्जा करने के लिए शत्रु के पार्श्व में दूर तक जाना था। इसके लिए दिन-दहाड़े बिना किसी आड़ के खुले मैदान से होते हुए आगे बढ़ना था। सूबेदार पल्लाद सिंह ने आक्रमण का नेतृत्व किया। शत्रु के बंकरों के निकट पहुंच कर, शत्रु की मझोली मशीनगन की गोली लगने से ये घायल हो गए किन्तु इन्होंने तब तक आक्रमण जारी रखा जब तक कि आमने-सामने की लड़ाई लड़कर पूर्ण सफलता प्राप्त न कर ली।

इस कार्यवाही में, सूबेदार पल्लाद सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

26. जे० सी०—35544 सूबेदार कृष्णन् नायर,
मद्रास रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 दिसम्बर, 1971)

13 दिसम्बर, 1971 को सूबेदार कृष्णन् नायर एक बटालियन की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे, जिसे खुलना क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। शत्रु ने इनकी प्लाटून पर, जो आगे बढ़ रही थी, तोपों और स्वचालित शस्त्रों से भारी तथा प्रभावी गोलाबारी की। अपनी सुरक्षा की तनिक भी चिन्ता न करते हुए ये अपने साथियों को शत्रु पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित करते रहे। अभी लक्ष्य दूर ही था कि इनके बाएं बाजू में एक गोली लगी किन्तु इससे भी ये ढीले नहीं पड़े। जब ये लक्ष्य से लगभग 150 गज ही दूर रह गए थे तो इन्हें एक गोले की किर्च आ लगी जिसके फलस्वरूप ये वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में, सूबेदार कृष्णन् नायर ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

27. जे० सी०-41949 नायब सूबेदार उमेद सिंह,
जाट रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

नायब सूबेदार उमेद सिंह उस दल के एक प्लाटून कमांडर थे, जिसे शत्रु के एक महत्वपूर्ण ठिकाने पर आक्रमण करने का कार्य सौंपा गया था। अनेक कठिनाइयों के बावजूद ये शत्रु के उस ठिकाने पर पैर जमाने में सफल हुए। शत्रु ने भारी संख्या में जवाबी आक्रमण किया लेकिन नायब सूबेदार उमेद सिंह के प्रेरणाप्रद नेतृत्व में इस प्लाटून ने शत्रु सैनिकों को भारी संख्या में हताहत कर दिया। इस कार्यवाही में नायब सूबेदार उमेद सिंह को गम्भीर चोटें लगीं जिनके फलस्वरूप ये वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में, नायब सूबेदार उमेद सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

28. 2547394 नायब सूबेदार वरघिज,
मद्रास रेजिमेन्ट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 दिसम्बर, 1971)

नायब सूबेदार वरघिज सेना की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे जिसे पूर्वी क्षेत्र में जैसोर-खुलना सड़क पर आगे बढ़ने का आदेश दिया गया था। शत्रु की मझोली मशीनगन की भारी गोलाबारी के कारण आगे बढ़ने में रुकावट हो रही थी। अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना नायब सूबेदार वरघिज ने शत्रु को ललकारा और खुले मैदान में रेंगते हुए आगे बढ़ कर राइफल तथा ग्रेनेड फायर से शत्रु की मझोली मशीनगन नष्ट कर दी। बाद की एक कार्यवाही में एक और मशीनगन चौकी पर ग्रेनेड फेंकते हुए ये गम्भीर रूप से घायल हो गए जिसके कारण ये वीरगति को प्राप्त हुए।

इन कार्यवाहियों में, नायब सूबेदार वरघिज ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

29. 3943836 हवलदार रमेश कुमार,
डोगरा रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

हवलदार रमेश कुमार को, जो एक प्लाटून की कमान कर रहे थे, कोमिला क्षेत्र में एक स्थान पर कुमुक पहुंचाने का आदेश दिया गया था। इनकी प्लाटून जब एक खुले धान के खेत से होकर गुजर रही थी, तो जंगल में छुपी शत्रु की एक कम्पनी ने उस पर आक्रमण कर दिया। हवलदार रमेश कुमार के प्रेरणाप्रद नेतृत्व में प्लाटून शत्रु से बड़ी दृढ़ता से लड़ी। शत्रु घमासान मुठभेड़ के उपरान्त घायलों तथा मृतकों को छोड़कर पीछे हट गया। जब हवलदार रमेश कुमार अपने जवानों को एकत्रित कर रहे थे तब इन्हें शत्रु की मशीनगन की एक गोली आ लगी जिससे ये घातक रूप से घायल हो गए।

इस कार्यवाही में, हवलदार रमेश कुमार ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

30. 3948143 हवलदार कुशाल सिंह,
डोगरा रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

हवलदार कुशाल सिंह, पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक सुदृढ़ ठिकाने पर प्रहार करने वाली अग्रिम कम्पनी की एक रिकायललैस राइफल टुकड़ी के कमांडर थे। शत्रु ने मझोली मशीनगन से भारी तथा प्रभावी गोलाबारी की। हवलदार कुशाल सिंह अपनी रिकायल-लैस गन के साथ आगे दौड़े और शत्रु की एक मझोली मशीनगन को नष्ट कर दिया। इन्होंने अकेले ही शत्रु की चार और मशीनगन चौकियों को नष्ट किया। जब ये छठवीं बार अपनी गन को साध रहे थे तब एक मझोली मशीनगन की गोली आ लगने से ये घातक रूप से घायल हो गए।

इस संक्रिया में, हवलदार कुशाल सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कुशलता तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

31. 4142319 हवलदार शंकर दत्त जोशी,
कुमाऊं रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 दिसम्बर, 1971)

हवलदार शंकर दत्त जोशी एक प्लाटून की कमान कर रहे थे, जिसे पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने को नष्ट कर देने का आदेश मिला था। इनके कुशल नेतृत्व में प्लाटून ने शत्रु के उस ठिकाने पर अपने पैर जमा दिए। शत्रु ने उनके पैर उखाड़ने के लिए उन पर

गोलाबारी की। हवलदार शंकर दत्त जोशी दौड़ कर शत्रु के मझोली मशीनगन बंकर तक गए तथा उसे नष्ट कर दिया। इस साहसिक कार्यवाही से उस इलाके के अन्य बंकरों से गोलाबारी शुरू हो गई। ये उस समय तक शत्रु के बंकरो में दौड़ते रहे जब तक कि गोलियों के घावों से इनका शरीर छलनी न हो गया, और ये युद्ध क्षेत्र में ही वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में, हवलदार शंकर दत्त जोशी ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

32. 3950984 लान्स हवलदार सुखदेव सिंह
डोगरा रेजिमेंट
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—16 दिसम्बर, 1971)

लान्स हवलदार सुखदेव सिंह डोगरा रेजिमेंट की एक बटालियन की अग्रिम टुकड़ी के कमांडर थे जिसे पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक सुदृढ़ ठिकाने पर आक्रमण करने का आदेश दिया गया था। आक्रमण के दौरान शत्रु की एक भारी मशीनगन ने पार्श्व की ओर से गोलाबारी प्रारम्भ कर दी। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना ये शत्रु की भारी मशीनगन तक रेंगते हुए गए और उस पर एक ग्रेनेड फेंक कर उसे निष्क्रिय कर दिया। तदुपरान्त इन्होंने पास ही शत्रु की दो खाइयों पर धावा बोला तथा शत्रु सैनिकों को संगीन से मार गिराया। इस कार्यवाही से बटालियन को लक्ष्य की प्राप्ति में बहुत बड़ी सहायता मिली।

इस कार्यवाही में लान्स हवलदार सुखदेव सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

33. 4146822 नायक शेर सिंह,
कुमाऊं रेजिमेंट

नायक शेर सिंह एक सेक्शन के कमांडर थे, जिसे पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने को निष्क्रिय करने का आदेश दिया गया था। यह सेक्शन शत्रु बंकर की हल्की मशीनगन की भारी तथा सही गोलाबारी में आ गया था। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना, नायक शेरसिंह ने बंकर पर धावा बोला और उसे निष्क्रिय कर दिया। इनके व्यक्तिगत उदाहरण से प्रेरित होकर, सेक्शन ने शत्रु की चौकी पर कब्जा कर लिया।

इस कार्यवाही में, नायक शेर सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

34. 13659162 नायक दुर्योधन सिंह,
गार्डस ब्रिगेड (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—14 दिसम्बर, 1971)

नायक दुर्योधन सिंह, सिलहट रेलवे स्टेशन पर कब्जा करने के दौरान अग्रिम सैक्शन के कमांडर थे। कूंच के तत्काल बाद इनकी प्लाटून शत्रु की भारी मशीनगन की जोरदार तथा सही गोलाबारी के कारण आगे न बढ़ सकी। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना, नायक दुर्योधन सिंह शत्रु की भारी मशीनगन चौकी तक रेंगते हुए गए और उसमें एक ग्रेनेड फेंका तथा कूल्हे की सहायता से स्टेनगन चला कर चौकी पर धावा बोल दिया। इन्होंने उस स्थान पर तैनात शत्रु के तीनों जवानों को मौत के घाट उतार कर उस ठिकाने को निष्प्रभावी कर दिया। उसी समय शत्रु की हल्की मशीनगन की एक गोली इन्हें आ लगी जिसके कारण ये वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में, नायक दुर्योधन सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

35. 3349282 नायक मोहिन्द्र सिंह,
सिख रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—16 दिसम्बर, 1971)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान नायक मोहिन्द्र सिंह सिख रेजिमेंट की एक बटालियन की एक कम्पनी के मीडियम मशीनगन सैक्शन के कमांडर थे। कम्पनी को पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के पीछे वाली सड़क अवरुद्ध करने का काम सौंपा गया था। कम्पनी अपने लक्ष्य पर पहुंची तो उसे शत्रु को वहां से उखाड़ फेंकने के लिए बड़ी दृढ़ता से आक्रमण करना पड़ा। इस कार्यवाही में नायक मोहिन्द्र सिंह और उनके सेक्शन के दो अन्य जवान घायल हो गए। चूंकि यह कम्पनी अपनी जगह पर दृढ़ता से डटी रही इसलिए शत्रु की एक प्लाटून ने एक टैंक के साथ उस पर जबाबी आक्रमण कर दिया। नायक मोहिन्द्र सिंह गम्भीर घावों के होते हुए भी, मशीनगन चलाते रहे और इतनी सही और भारी गोलाबारी की, कि शत्रु अपना टैंक पीछे छोड़ कर मोर्चे से भाग खड़ा हुआ। इसी दौरान नायक मोहिन्द्र सिंह अपने घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में नायक मोहिन्द्र सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

36. 2748767 नायक मारुति नकिल
मराठा लाइट इन्फैन्ट्री। (मरणोपरान्त)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान नायक मारुति नकिल मराठा लाइट इन्फैन्ट्री की एक बटालियन की एक कम्पनी के साथ मीडियम मशीनगन सैक्शन कमांडर थे। वह कम्पनी, पूर्वी क्षेत्र म बटालियन के आगे बढ़ने में हरावल दस्ते का काम कर रही थी। शत्रु ने तोपखाने से भारी और सही गोलाबारी शुरू कर दी। साथ ही तीन मीडियम मशीनगनों ने एक ओर से गोलाबारी करना आरम्भ कर दिया था और भारी संख्या में सैनिक हताहत होने लगे थे। स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए नायक मारुति नकिल ने, अपनी सुरक्षा की पूर्ण उपेक्षा करते हुए, अपने सैक्शन को फौरन कार्यवाही करने के लिए कहा और शत्रु की एक मीडियम मशीनगन को निष्क्रिय कर दिया। अन्य दो मशीनगनों को हमारे टैंकों ने नष्ट कर डाला। इस कार्यवाही के दौरान नायक मारुति नकिल को एक मीडियम मशीनगन की एक गोली लगी जिससे ये वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में नायक मारुति ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

37. 2750559 नायक अंकुश चव्हाण
मराठा लाइट इन्फैन्ट्री,
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 दिसम्बर, 1971)

पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने पर आक्रमण के दौरान नायक अंकुश चव्हाण एक कम्पनी के नं० 5 प्लाटून के बाईं ओर की अग्रिम

सैक्शन के कमांडर थे। आक्रमण के दौरान इनकी हल्की मशीनगन के दोनों चालक गम्भीर रूप से घायल हो गए थे किन्तु नायक अंकुश चव्हाण ने स्वयं स्वचालित शस्त्र अपने हाथ में उठा लिया और कूल्हे से तब तक गोलाबारी करते रहे जब कि लक्ष्य प्राप्त नहीं हो गया। अगले दिन शत्रु हमारी कम्पनी के ठिकाने पर लगातार आक्रमण करता रहा किन्तु नायक अंकुश चव्हाण की हल्की मशीनगन की सही और भारी गोलाबारी से शत्रु के सब प्रयास विफल हो गए और उसके सैनिक भारी संख्या में हताहत हुए।

इन कार्यवाहियों में नायक अंकुश चव्हाण ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

38. 2849833 लान्स नायक अभय राम,
राजपूताना राइफल्स (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 दिसम्बर, 1971)

लान्स नायक अभय राम राजपूताना राइफल्स की एक बटालियन के साथ उस समय थ जब वह बटालियन पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक सुदृढ़ ठिकाने को लेने के लिए संघर्ष कर रही थी। आक्रमण किया गया और लान्स नायक अभय राम ने पास-पास की मुठभेड़ के दौरान शत्रु के 6 सैनिकों को मार गिराया। इस कार्यवाही में ये घायल हो गए तथा बाद में घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हुए। इनका वीरतापूर्ण कार्य कम्पनी के लिए प्रेरणा का स्रोत था जिसके कारण शत्रु को अपने सुदृढ़ ठिकाने से भागना पड़ा।

इस कार्यवाही में लान्स नायक अभय राम ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

39. 5835313 लान्स नायक ओम बहादुर छेत्री,
9वीं गोरखा राइफल्स। (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 दिसम्बर, 1971)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियायों के दौरान लान्स नायक ओम बहादुर छेत्री 9वीं गोरखा राइफल्स की एक बटालियन की एक कम्पनी के सैक्शन कमांडर थे। पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने पर आक्रमण के दौरान कम्पनी पर शत्रु ने तोपों, मार्टरों तथा स्वचालित हथियारों से सही और भारी गोलाबारी की। लान्स नायक छेत्री आक्रमण का नेतृत्व करते हुए घायल हो गए। यद्यपि इनके शरीर से काफी खून बह रहा था फिर भी इन्होंने एक मशीनगन के ठिकाने पर धावा बोला तथा अकेले ही उसे निष्क्रिय कर दिया। उसके तुरन्त बाद ये गिर गए और घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हुए। इनके व्यक्तिगत उदाहरण से प्रेरणा पाकर सैक्शन अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हुआ।

इस कार्यवाही में, लान्स नायक ओम बहादुर छेत्री ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

40. 5437958 लान्स नायक बलबहादुर गुरुंग,
5वीं गोरखा राइफल्स।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 दिसम्बर, 1971)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान लान्स नायक बलबहादुर गुरुंग तथा इनके सैक्शन को सिलहट क्षेत्र में शत्रु के एक बंकर पर धावा बोलने का कार्य सौंपा गया था। लान्स नायक गुरुंग एक अन्य जवान के साथ शत्रु की चौकी से 15 गज की दूरी तक रेंगते हुए गए तथा उस पर ग्रेनेड फेंके। चूंकि बंकर का सामने का द्वार बहुत छोटा था अतः ग्रेनेड बाहर ही फट गया और उससे शत्रु सतर्क हो गया, और उसने भी शस्त्र से गोलाबारी शुरू कर दी। लान्स नायक गुरुंग ने बड़ी सूझ-बूझ और दृढ़ संकल्प के साथ खुकरी लेकर शत्रु के बंकर पर धावा बोला तथा शत्रु के दो सैनिकों को मार गिराया और शेष सैनिक दो मशीनी मशीनगनों तथा भारी मात्रा में गोला-बारूद छोड़ कर भाग खड़े हुए।

इस कार्यवाही में लान्स नायक बलबहादुर गुरुंग ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

41. 2451226 सिपाही बनवारी लाल,
पंजाब रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

सिपाही बनवारी लाल पंजाब रेजिमेंट की एक बटालियन की एक कम्पनी में तैनात थे जिसे पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक अधिकृत क्षेत्र पर कब्जा करने का कार्य सौंपा गया था। जब कम्पनी संगठित हो रही थी तो शत्रु ने उस पर तोपों से सही और भारी गोलाबारी की। सिपाही बनवारी लाल ने बड़ी सूझ-बूझ से काम लिया और एक बड़े वृक्ष को अपनी हल्की मशीनगन का निशाना बनाया, जहां शत्रु का एक प्रेक्षण चौकी अधिकारी छिपा हुआ था और उसे मार गिराया। युद्ध में बुरी तरह से घायल होने पर भी ये कम्पनी को शत्रु पर प्रहार करते समय अपनी हल्की मशीनगन से तब तक पार्श्व आवरण देते रहे जब तक कि ये घावों के कारण वीरगति को प्राप्त न हो गए।

इस कार्यवाही में सिपाही बनवारी लाल ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

42. 2567525 सिपाही कोल्ली जौन कृष्ठाफर,
मद्रास रेजिमेन्ट। (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 दिसम्बर, 1971)

पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने पर आक्रमण के दौरान सिपाही कोल्ली जौन कृष्ठाफर मद्रास रेजिमेंट की एक बटालियन के साथ थे। आक्रमण शुरू हो जाने के बाद सिपाही कृष्ठाफर की प्लाटून शत्रु की उस मशीनी मशीनगन जो कि एक ऊंची दीवार के पीछे एक खाई में स्थित थी, की भारी तथा सही गोलाबारी के कारण आगे न बढ़ सकी। सिपाही कृष्ठाफर अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना, मशीनगन को निष्क्रिय करने के लिए आगे बढ़े। ये उस दीवार की एक मात्र मोरी से अन्दर जा घुसे और शत्रु की खाई में एक ग्रेनेड फेंका और बाद में स्वयं उसमें कूद गए। उस खाई में ही इन्होंने आत्मोसर्ग किया।

इस कार्यवाही में सिपाही कोल्ली जौन कृष्ठाफर ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

43. 13661050 गार्ड्समैन बृज लाल,
गार्डस् ब्रिगेड। (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—14 दिसम्बर, 1971)

गार्डसमैन बृज लाल, गार्डस ब्रिगेड की बटालियन की एक प्लाटून में वायरलैस औपरेटर थे जिसे सियालकोट क्षेत्र में शत्रु के

एक गश्ती दल को उसके आधार स्थल से हटाए जाने का काम सौंपा गया था। जैसे ही प्लाटून उसके नजदीक पहुंची, शत्रु की एक मझोली मशीनगन ने गोलाबारी शुरू कर दी जिससे हमारे तीन जवान मारे गए। गार्डसमैन बृजलाल ने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना कूल्हे से स्टेनगन से गोलाबारी करते हुए शत्रु की मशीनगन के ठिकाने पर धावा बोल दिया तथा मशीनगन चालक को मार गिराया, लेकिन इन्हें भी मशीनगन की एक गोली आ लगी जिसके फलस्वरूप ये वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में गार्डसमैन बृज लाल ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

44. 5238218 राइफलमैन प्रेम बहादुर थापा

3री गोरखा राइफल्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 दिसम्बर, 1971)

राइफलमैन प्रेम बहादुर थापा पश्चिमी क्षेत्र में शत्रु पर आक्रमण के दौरान 3री गोरखा राइफल्स की एक कम्पनी के साथ थे। कूच के थोड़ी देर बाद शत्रु की एक मझोली मशीनगन ने एक ओर से अचानक गोलाबारी प्रारम्भ कर दी और आक्रमण को रोक दिया। अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना, राइफलमैन थापा उस मशीनगन को निष्क्रिय करने के लिए आगे बढ़े। जब ये मशीनगन के ठिकाने की ओर रेंग कर जा रहे थे तो इन्हें गोलियों की बौछार लगी और तेजी से रक्त बहने लगा। आयने घाव की परवाह किए बिना इन्होंने रेंगना चालू रखा तथा खाई में एक ग्रेनेड फेंक कर मशीनगन को निष्क्रिय कर दिया, किन्तु घावों के कारण ये वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में राइफलमैन प्रेम बहादुर थापा ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

45. श्री लालथ्वामा लुशाई

सहायक कमांडेंट, सीमा सुरक्षा दल

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसम्बर, 1971)

4 दिसम्बर, 1971 को सहायक कमांडेंट लालथ्वामा लुशाई पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने पर आक्रमण करने के लिए एक कम्पनी का नेतृत्व कर रहे थे। इन्होंने रात्रि में कम्पनी को नदी पार करवा कर, लम्बे चक्कर से शत्रु पर पीछे से आक्रमण किया। इन्होंने शत्रु को अचानक ही धर दबोचा और उसके ठिकाने को कब्जे में करके उसने सैनिकों को भारी संख्या में हताहत किया। पुनः 10 दिसम्बर, 1971 को सहायक कमांडेंट लालथ्वामा लुशाई ने अपनी कम्पनी के साथ शत्रु के एक दूसरे ठिकाने के चारों ओर दूर बाह्य किनारों से आकर सड़क बंद कर दी। यद्यपि ऐसा करते हुए शत्रु से चार अलग-अलग स्थानों पर मुठभेड़ हुई फिर भी ये बड़ी तीव्रता से अपनी कम्पनी को अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर ले गए। इस कार्यवाही में इन्होंने शत्रु के 8 सैनिकों को बंदी बनाया। पुनः 14 दिसम्बर, 1971 को ये बाहरी किनारों से आगे बढ़े और इस प्रकार शत्रु के ठिकाने पर कब्जा करने में सहायक बने।

इन सब कार्यवाहियों में सहायक कमांडेंट लालथ्वामा लुशाई ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

सं० 125—प्रेज/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्ति को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में वीरता के लिए "वीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

कमांडर ऋषि राज सूद (X) एन० एम०
भारतीय नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के साथ संघर्ष के दौरान, कमांडर ऋषि राज सूद उन भारतीय नौसैनिक पोतों में से एक पोत के कमान अफसर थे, जिन्होंने अरब सागर की संक्रियाओं में भाग लिया था। इनके पोत ने उस पनडुब्बी रोधी आक्रमण करने वाले दल के एक अंग के रूप में कार्य किया, जिसे शत्रु की पनडुब्बियों का पता लगाने और उन्हें नष्ट करना था। जब भारतीय नौसैनिक पोत "खुकरी" पर शत्रु की एक पनडुब्बी ने टारपीडो से कई बार वार किया तो कमाण्डर सूद शत्रु की पनडुब्बी पर जवाबी हमला करने के लिए अपने पोत को लेकर आए। इन्होंने शत्रु की पनडुब्बी पर इतना भीषण और कठोर प्रहार किया कि शत्रु उसे न झेल सका और उसे पीछे हटना पड़ा।

इस कार्यवाही में कमांडर ऋषि राज सूद ने उच्च कोटि की वीरता, नेतृत्व तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

सं० 126—प्रेज/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्ति को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में वीरता के लिए "वीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

फ्लाइंग अफसर सतीश चन्द्र शर्मा (12244),
फ्लाइंग (नेवीगेटर)।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान फ्लाइंग अफसर सतीश चन्द्र शर्मा को पूर्वी क्षेत्र में एक ब्रिगेड के साथ हवाई सम्पर्क दल में अग्रवर्ती वायुयान नियंत्रक के रूप में तैनात किया गया था। 7 दिसम्बर, 1971 को, फ्लाइंग अफसर शर्मा को एक कम्पनी के साथ जाने के लिए तैनात किया गया था जिसे हैलिकाप्टरों के द्वारा उस स्थल पर पहुंचाया गया जो जो कि सिलहट में शत्रु के अधिकृत क्षेत्र के पीछे पड़ता था। शत्रु की भारी गोलाबारी के मध्य ये एक छोटे दल और सिगनल सेटों के साथ शाम 5 बजे हैलिपैड पर उतरे। इन्होंने तत्काल स्थिति पर नियंत्रण किया और अपने जवानों को एक ऐसे स्थान पर ले गए जहां पर से इन्होंने आने वाले हैलिकाप्टरों को सूरमा नदी के एक ओर शत्रु के ठिकानों पर और सर्किट हाऊस में उसके मुख्यालय पर प्रहार करने का निदेशन किया। यह प्रहार इतना कारगार साबित हुआ कि शत्रु ने काफी समय तक गोलाबारी नहीं की। 8 दिसम्बर, 1971 की सुबह को जब फिर हैलिकाप्टर उतर रहे थे तो शत्रु ने उनपर गोलाबारी शुरू की। शत्रु द्वारा छोटे शस्त्रों एवं तोपों से हो रही गोलाबारी के बीच फ्लाइंग अफसर शर्मा पुनः अनुकूल स्थान पर गए और वहां से अपने बम-वर्षक वायुयानों को शत्रु के ठिकानों और सही लक्ष्यों पर प्रहार करने का सफल निदेशन करते रहे। ये प्रहार इतने सही विमानों पर किए गए कि शत्रु की ओर से गोलाबारी तत्काल बन्द हो गई। 8/9 दिसम्बर, 1971 की रात को शत्रु ने हमारी दो अग्रिम कम्पनियों के चारों ओर के ठिकानों पर कब्जा कर लिया और उन पर

एम० एम० जी० तथा मार्टर से भारी गोलाबारी कर दी । फ्लाइंग अफसर शर्मा फिर उपयुक्त स्थान पर गए और वहां से वायुयानों को प्रहार करने के लिए कारगर ढंग से निदेश देते रहे । अपने चारों ओर से होने वाली शत्रु की गोलाबारी की किंचित परवाह किए बिना ये अपने अनुरक्षी-दल को अग्रिम कम्पनी की स्थिति की ओर ले गए । मार्ग में शत्रु के एक छोटे गश्ती दल से उनकी मुठभेड़ हो गई जिसने इनके दल पर पास से एक उपवन से गोलियां चलाई थी । इन्फैन्टी के रणकौशल से अनभिज्ञ होने पर भी, फ्लाइंग अफसर शर्मा ने अपने उस छोटे दल को शत्रु पर आक्रमण करने का आदेश दिया और स्वयं आगे रह कर शत्रु के गश्ती दल पर धावा किया । इस सहज और तुरन्त कार्यवाही के परिणामस्वरूप शत्रु के दो सैनिक मारे गए । फ्लाइंग अफसर शर्मा तथा इनका दल आत्म-विश्वास के साथ आगे बढ़ा और आगे बढ़ी हुई कम्पनी के निकट एक उपयुक्त स्थान पर जा पहुंचा । फ्लाइंग अफसर शर्मा ने उस स्थान से अपने वायुयानों को शत्रु के अधिकृत क्षेत्र पर प्रहार करने का निदेश किया । हवाई प्रहार इतना ठीक तथा कारगर रहा कि हमारी आगे बढ़ी हुई कम्पनी पर शत्रु के सम्भावित आक्रमण की सारी तैयारी छिन्न-भिन्न हो गई ।

आद्योपान्त फ्लाइंग अफसर सतीश चन्द्र शर्मा ने उच्च-कोटि की वीरता, नेतृत्व तथा व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया ।

सं० 127-प्रेज/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को वीरता के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1515434 नायक आदर्श कुमार अरोड़ा,
इंजीनियर्स ।

फील्ड कम्पनी की एक प्लाटन को पश्चिमी क्षेत्र में से शत्रु द्वारा बिछाई गई सुरंगों को तलाश करने का काम सौंपा गया था। काम समाप्त होने पर उन सुरंगों को तीन टन वाली एक गाड़ी में लादा गया । वह गाड़ी सैन्ट्रल लाइन से होते हुए, जहां से सुरंगे निकाल दी गई थी, जब वापस हो रही थी तो एक स्थान पर मोड़ लेते समय एक अनदेखी टैंक रोधी सुरंग के ऊपर जा पहुंची और उसके पैट्रोल की टंकी में आग लग गई । गाड़ी में बैठा एक और जवान बाहर गिर पड़ा । नायक आदर्श कुमार अरोड़ा जो उस समय गाड़ी के लगभग 100 गज पीछे पैदल चले आ रहे थे, तेजी से घटनास्थल की ओर दौड़े और आग बुझाने का प्रयत्न करने लगे । लेकिन आग उस समय तक काबू से बाहर हो चुकी थी और लगभग 6000 पौंड विस्फोटक पदार्थ से लदी गाड़ी के उड़ जाने का प्रत्यक्ष खतरा हो गया । अपनी जान की तनिक भी परवाह किये बिना नायक आर्दश कुमार अरोड़ा ने उस अचेत जवान को उठाया और 50 गज दूर एक सुरक्षित स्थान पर ले गए । उसके तुरन्त बाद सुरंगों से लदी गाड़ी विस्फोट के कारण टुकड़े-टुकड़े हो गई ।

इस कार्यवाही में नायक आर्दश कुमार अरोड़ा ने उच्च-कोटि की वीरता का परिचय दिया ।

2. 13658468 गार्ड्समैन तेज सिंह,
गार्ड्स ब्रिगेड ।

पश्चिमी क्षेत्र में गार्ड्समैन जेत सिंह जब रायपुर स्थित एक प्लाटून में संतरी ड्यूटी दे रहे थे, तो इन्हें दो विस्फोटों की आवाज़ सुनाई दी । इन्होंने दो अफसरों को, जो उस क्षेत्र की सुरंगों कतारों तथा रिक्त स्थानों को नक्शे में भरने के लिए गश्त लगा रहे थे, सुरंगों के ऊपर जाते देखा । वे सुरंग क्षेत्र में गम्भीर रूप से घायल हो गए थे । गार्ड्समैन तेज सिंह अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना तुरन्त दौड़े और घायल अफसरों की चेतावनी के बावजूद सुरंग-क्षेत्र में प्रवेश कर उस स्थान पर जा पहुंचे जहां पर दोनों अफसर घायल पड़े थे । इन्होंने बड़ी सूझ-बूझ से काम लिया और पहले एक अफसर को दृढ़ता से एक जगह पर रोका जिससे वह दूसरी सुरंग की ओर न लुढ़क जाये और फिर उसे बड़ी सावधानी से उठाकर सुरंग क्षेत्र से सुरक्षित बाहर निकाला । दूसरे घायल अफसर को इसी प्रकार एक और गार्ड्समैन ने बचाया ।

इस कार्यवाही में गार्ड्समैन तेज सिंह ने उच्च-कोटि की वीरता का परिचय दिया ।

3. 3355514 गार्ड्समैन सुरजन सिंह,
गार्ड्स ब्रिगेड ।

पश्चिमी क्षेत्र में गार्ड्समैन सुरजन सिंह जब रायपुर स्थित एक प्लाटून में संतरी ड्यूटी दे रहे थे, तो उन्हें दो विस्फोटों की आवाज सुनाई दी । उन्होंने दो अफसरों को, जो उस क्षेत्र की सुरंगी कतारों तथा रिक्त स्थानों को नक्शे में भरने के लिए गश्त लगा रहे थे, सुरंगों के ऊपर जाते देखा । वे सुरंग क्षेत्र में गम्भीर रूप से घायल हो गए थे । गार्ड्समैन सुरजन सिंह अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना तुरन्त दौड़े और घायल अफसरों की चेतावनी के बावजूद सुरंग-क्षेत्र में प्रवेश कर उस स्थान पर जा पहुंचे जहां पर दोनों अफसर घायल पड़े थे । इन्होंने बड़ी सूझ-बूझ से काम लिया और पहले एक अफसर को दृढ़ता से एक जगह पर रोका जिससे वह दूसरी सुरंग की ओर न लुढ़क जाये और फिर उसे बड़ी सावधानी से उठाकर सुरंग-क्षेत्र से सुरक्षित । बाहर निकाला दूसरे घायल अफसर को इसी प्रकार एक और गार्ड्समैन ने बचाया ।

इस कार्यवाही में गार्ड्समैन सुरजन सिंह ने उच्च-कोटि की वीरता का परिचय दिया ।

दिनांक 6 दिसम्बर 1972

सं० 128-प्रेज०/72—राष्ट्रपति मध्यप्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते है :—

अधिकारी का नाम तथा पद
श्री बेटा लाल शर्मा, (स्वर्गीय)
पुलिस उप-निरीक्षक,
सेओंधा पुलिस थाना,
जिला दतिया,
मध्य प्रदेश ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

डाकू बहादुरा गूजर का गिरोह मध्य प्रदेश के दतिया व ग्वालियर जिलों और उत्तर प्रदेश के झांसी जालोन जिलो में हत्या, डकैती व अपहरण के लिए कुख्यात था । श्री बेटा लाल शर्मा को गिरोह के विरुद्ध कार्यवाही करने का निदेश दिया गया था । 5 अप्रल, 1972 को श्री बेटा लाल शर्मा को सूचना

मिली कि डाकू बहादुरा गुजर का गिरोह गांव मलियापुरा के समीप एक खेत में है। वे थाने से उपलब्ध पुलिस को साथ लेकर शीघ्र ही डाकुओं के छिपने के स्थान की ओर चल दिये। पुलिस को दो दलों में विभाजित किया गया। एक का नेतृत्व श्री बेटा लाल शर्मा द्वारा स्वयं किया गया और दूसरे का सर्कल इन्सपैक्टर द्वारा। श्री बेटा लाल शर्मा ने दो बैल गाड़ियां किराये पर लीं और सादे कपड़ों में उस स्थान की ओर बढ़े जहां डाकूओं के छिपने का सन्देह था। जैसे ही वे डाकुओं के छिपने के स्थान के समीप पहुंचे डाकुओं ने उन पर गोली चला दी। श्री बेटा लाल शर्मा और उनके दल के लोग तुरन्त बैल गाड़ियों से कूदे, मोर्चा सम्भाला और जवाब में गोली चलाई। डाकुओं ने उस स्थान से भाग निकलने का प्रयत्न किया जहां रास्ता पूरी तरह नहीं रोका हुआ था। श्री बेटा लाल शर्मा डाकुओं की चाल को भांप गए और उस रास्ते को बन्द करने के लिए कभी रेंग कर और कभी दौड़ कर आगे बढ़े। उन्होंने डाकुओं की गोलियों की परवाह न करते हुए गिरोह के भागने के रास्ते को बन्द कर दिया। गोलीबारी के दौरान उन्होंने एक डाकू को गोली से मार डाला। उन्हें स्वयं भी सिर में गोली लगी जिससे घटना स्थल पर ही उनकी मृत्यु हो गई। मुठभेड़ में पुलिस ने एक और डाकू को मार डाला और एक अपहृत व्यक्ति को छुड़ा लिया।

इस मुठभेड़ में श्री बेटा लाल शर्मा उत्कृष्ट साहस का परिचय दिया और अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(I) के अन्तर्गत बीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 5 अप्रैल 1972 से दिया जाएगा।

सं० 129-प्रेज/72—राष्ट्रपति मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नांकित अधिकारियों को उनकी बीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम तथा पद
श्री सदाराम शम्भूजी बरवडे,
पुलिस उप अधीक्षक,
दतिया,
मध्य प्रदेश।

श्री राघवेन्द्र सिंह अतवल,
स्टेशन अधिकारी, कोतवाली,
दतिया,
मध्य प्रदेश।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया :

डाकू बहादुरा गुजर का गिरोह अधाधुन्ध हत्याओं और अपहरणों के लिए मध्य प्रदेश के ग्वालियर क्षेत्र में कुख्यात हो गया था। कुछ समय तक वे पुलिस की गिरफ्तारी से बचते रहे। 16 फरवरी, 1972 की शाम को श्री राघवेन्द्र सिंह अतवल को सूचना मिली कि डाकू बहादुरा गुजर का गिरोह दतिया जिले में गांव व थाना कालीपुर, में मौजूद है। सूचना प्राप्त होने पर श्री सदाराम शम्भूजी बरवड़े ने छापा मारने का आयोजन किया। गिरोह के छिपने के स्थान पर पहुंच कर पुलिस दल को तीन भागों में बांट दिया गया और छिपने के स्थान को घेर लिया। डाकुओं को पुलिस की उपस्थिति का पता लग गया और उन्होंने उन पर भारी गोलाबारी शुरू कर दी। श्री बरवड़े एक गोली से बाल-बाल बचे किन्तु वे विचलित नहीं हुए। वे दीवार पर चढ़ गये और डाकुओं को आत्म समर्पण करने का आदेश दिया। डाकुओं की भारी गोलीबारी की परवाह न करते हुए श्री अतवल भी साथ वाले मकान की छत पर चढ़ गये और वहां से उस मकान की छत पर कूदे जहां डाकू छिपे हुए थे। डाकुओं ने भारी गोलीबारी की ओट में बचकर भाग निकलने का प्रयत्न किया किन्तु इन दोनों अधिकारियों ने उनके इस प्रयत्न को विफल कर दिया। तत्पश्चात् डाकुओं ने एक कमरे में शरण ली और अन्दर से चटकनी बन्द करली। बड़े समीप से लड़ाई शुरू हुई जिसमें एक ओर सर्वश्री बरवड़े और अतवल थे और दूसरी ओर डाकू गिरोह। श्री बरवड़े और अतवल ने दो डाकुओं को गोली से मार डाला और उनके हथियार और गोला बारूद कब्जे में कर लिया।

इस मुठभेड़ में श्री सदाराम शम्भूजी बरवड़े और श्री राघवेन्द्र सिंह अतवल ने उत्कृष्ट साहस तथा अनुकरणीय बीरता का परिचय दिया।

2. ये पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(I) के अन्तर्गत बीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप श्री राघवेन्द्र सिंह अतवल, स्टेशन अधिकारी को नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 16 फरवरी, 1972 से दिया जाएगा।

सं० 130-प्रेज०-72—राष्ट्रपति कलकत्ता पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी बीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद
श्री कान्ती भूषण दास गुप्त,
सार्जेन्ट नं० 190,
कलकत्ता पुलिस,
पश्चिम बंगाल।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया :

28 अक्तूबर, 1970 को श्री कान्ती भूषण दास गुप्त को सूचना मिली कि बड़टोला पुलिस थाना क्षेत्र का एक उग्रवादी मस्जिदबाड़ी स्ट्रीट, कलकत्ता में एक स्थान पर हो रहे संगीत समारोह में उपस्थित है। सूचना मिलने पर श्री दास गुप्त ने उग्रवादी के भागने के सभी रास्ते बन्द कर दिये और केवल दो कांस्टेबलों को साथ लेकर उस क्षेत्र में प्रवेश किया। रात्रि के लगभग पौने दस बजे श्री दास गुप्त ने भीड़ में से उस उग्रवादी को गिरफ्तार किया। जब श्री दास गुप्त बाहर आ रहे थे तो उस उग्रवादी ने छुरा निकालने की कोशिश की परन्तु श्री दास गुप्त के साथी कांस्टेबलों में से एकने उसके प्रयत्न को विफल कर दिया। इस पर उग्रवादी ने सहायता के लिए आवाज लगाई जिसके परिणामस्वरूप लगभग 20 हथियार-बन्द व्यक्तियों

ने पुलिस पार्टी को घेर लिया और उग्रवादी को पुलिस की हिरासत में से छुड़ाने का प्रयत्न किया। जब श्री दास गुप्त भीड़ का मुकाबला कर रहे थे तो उग्रवादी ने कांस्टेबलों में से एक से रिवाल्वर छीन लिया और एक गोली चलाई जो कांस्टेबल के बाएं पैर में लगी। फिर वह भरी हुई रिवाल्वर लेकर श्री दास गुप्त की ओर मुड़ा। श्री दास गुप्त ने अपनी रिवाल्वर निकाली और उग्रवादी पर गोली चला दी जिसके परिणामस्वरूप उग्रवादी जमीन पर गिर पड़ा। उसी तत्परता से उन्होंने उस घायल उग्रवादी के हाथ से भरी हुई रिवाल्वर छीन ली। इसी बीच और पुलिस कुमुक वहां पहुंच गई और उग्रवादियों को खदेड़ दिया गया। घायल कुख्यात उग्रवादी को अस्पताल में मृत घोषित कर दिया गया।

इस कार्यवाही में श्री कान्ती भूषण दास गुप्त ने उच्चकोटि के शौर्य और साहस का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस नियमावली के नियम 4(1) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 28 अक्टूबर, 1970 से दिया जाएगा।

सं० 131-प्रेज/72—राष्ट्रपति सीमा सुरक्षा दल के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद
श्री सिंगदल लिम्बू, सं० 59866016
नायक,
86वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

श्री सिंगदल लिम्बू ने 12 से 15 दिसम्बर, 1971 के दौरान बंगला देश में हुए संग्राम में वीरतापूर्ण कार्य किये। 12 और 13 दिसम्बर, 1971 को श्री लिम्बू अपने कम्पनी कमांडर के साथ टोह लेने गये और उपयोगी सूचना प्राप्त की। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने व्यक्तिगत सुरक्षा की कतई परवाह न करते हुए नागरदेंगरी, अतग्रोम, मणीगंज और फतेहपुर की लड़ाई में एकत्र होने के स्थान से लड़ाई के वास्तविक स्थान तक अपनी कम्पनी का मार्गदर्शन किया। पुनः 13 दिसम्बर, 1971 को उन्होंने मणीगंज व फतेहपुर क्षेत्र में शत्रु के बंकरों का सफाया किया और एक पाकिस्तानी जासूस और बहुत गोला-बारूद समेत एक चीनी राइफल पकड़ी। 14 दिसम्बर, 1971 को मगम टीला पर आक्रमण के दौरान उन्होंने अपनी कम्पनी को फायरिंग संरक्षण दिया जिससे वे लोग शत्रु पर आक्रमण करने के लिए अनुकूल मोर्चा संभाल सकें।

इस कार्यवाही में श्री सिंगदल लिम्बू ने उत्कृष्ट वीरता एवं उदाहरणीय कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 15 दिसम्बर, 1971 से दिया जाएगा।

सं० 132-प्रेज/72—राष्ट्रपति कलकत्ता पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद
श्री हीरक लाल दास गुप्त,
सार्जेंट, बेतार विभाग,
कलकत्ता पुलिस,
पश्चिम बंगाल।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

1 मार्च, 1971 को प्रातः लगभग 4 बजकर 50 मिनट पर जब श्री हीरक लाला दास गुप्त कलकत्ता के श्यामपुकुर तथा जोराबागान क्षेत्रों में वायरलैस गश्त ड्यूटी पर थे तो उन्हें सूचना मिली कि सेवाबाजार स्ट्रीट और रविन्द्र सारणि चौराहे के समीप भारी दंगा हुआ है। जब घटनास्थल पर पहुंचे तो उन्होंने बमों, पाइप-गनों इत्यादी से लैस दो दलों को लड़ते हुए देखा। जब वे उनके समीप नहुंचे तो उन पर भी बमों से आक्रमण किया गया। विरोधी दलों को तितर-बितर करने के बाद उन्हें सूचना मिली कि श्यामपुकुर के उत्तर में भी दंगा हुआ है। दंगाग्रस्त स्थान एक तंग गली में था। इसलिए वे अपनी वायरलैस गाड़ी को छोड़कर घटनास्थान की ओर पैदल बढ़े। दंगाग्रस्त स्थान पर पहुंचने पर उन्होंने एक घायल पुलिस अधिकारी को जमीन पर पड़े हुए देखा। जैसे ही वे पुलिस अधिकारी के समीप गये उन पर मकान की छतों से बम फैंके गये। श्री दास गुप्त अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किये बिना तंग गली के साथ-साथ रेंगते रहे। उनके बाएं पैर पर एक बम लगा किन्तु अपने गम्भीर घाव की परवाह न करते हुए वह आगे बढ़ते रहे और घायल पुलिस, अधिकारी को अपनी वायरलैस गाड़ी तक लाने में सफल हुए।

इस मुठभेड़ में श्री हीरक लाल दास गुप्त ने उल्लेखनीय साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 1 मार्च, 1972 से दिया जाएगा।

पे० ना० कृष्णमणि,
राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

राज्य सभा सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 1 दिसम्बर 1972

सं० आर० एस० 18/72-टी०—उड़ीसा राज्य का प्रतिनिधित्व करने वाली राज्य सभा की एक निर्वाचित सदस्य, श्रीमती नन्दिनी शतपथी ने 29 नवम्बर, 1972 से राज्य सभा में अपना स्थान त्याग दिया है।

बी० एन० बनर्जी, सचिव

विधि और न्याय मंत्रालय

(विधायी विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 25 नवम्बर 1972

संकल्प

सं० फा० 4(1)/70-रा० भा०—विधि और न्याय मंत्रालय के लिए हिन्दी के बारे में सलाहकार समिति का पुनर्गठन करने वाले संकल्प संख्या फा० 4(1)/70-रा० भा०, दिनांक 10 जनवरी, 1972 के और उपान्तरण में, भारत सरकार ने विनिश्चय किया है कि श्री श्रीनिवास रेड्डी, संसद सदस्य (राज्य सभा) भी, उन सदस्यों के अतिरिक्त जिनके नाम पहले ही अधिसूचित कर दिए गए हैं, उक्त समिति के सदस्य होंगे।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी राज्य सरकारों और संघ क्षेत्र प्रशासनों, प्रधान मंत्री सचिवालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, संसदीय कार्य विभाग, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, योजना आयोग, राष्ट्रपति सचिवालय, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक, महा लेखापाल, केन्द्रीय राजस्व और भारत सरकार के सभी मंत्रालय और विभागों को भेज दी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प सामान्य जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाए।

एन० श्रीनिवासन, उप सचिव

गृह मंत्रालय

नई दिल्ली-110001, दिनांक 30 नवम्बर 1972

सं० 26/12/72-ए० एन० एल०—भारत सरकार के गृह मंत्रालय की तारीख 4 अक्तूबर, 1972 की संख्या 26/12/72-ए० एन० एल० की अधिसूचना के पैरा 2 के खण्ड (घ) के अनुसरण में, मुख्य आयुक्त की सलाहकार समिति के निम्नलिखित सदस्य, तारीख 31 मार्च, 1973 तक की अवधि के लिए, गृह मंत्री से संबद्ध अन्डमान व नीकोबार द्वीप समूह के संघ शासित क्षेत्र की सलाहकार समिति के सदस्य चुने गए हैं :

1. श्री ए० पी० अब्दुल्ला कुठी
2. श्री एडविन मोसिस
3. श्री मधुसूदन मंडल
4. श्री महा नंद बिस्वास
5. श्री नेहचल सिंह चावला
6. श्री राम नरेश सिंह
7. कैप्टेन सममन लोमे।

जयकर जांनसन, उप सचिव

स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्रालय

(स्वास्थ्य विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 1 दिसम्बर 1972

सं० 13016/9/71 पी० एच० ई०—भारत सरकार ने नगरों के कूड़े कचर और मल के निपटान की समस्या का अध्ययन करने तथा खेती के प्रयोजनों के लिये ऐसे कूड़े कचरे की उपयोगिता का पता लगाने के लिये 6 मई, 1972 के संकल्प संख्या ओ० 13016/9/71 ज० स्वा० ई० के अनुसार नगरों के कूड़े करकट के संबंध में एक समिति छः माह की अवधि के लिये अर्थात् 5 नवम्बर 1972 तक गठित की थी। इस समिति के कार्यालय को 6 नवम्बर, 1972 से आगे और छः माह की अवधि के लिये बढ़ाने का निश्चय किया गया है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रतिलिपि इन कार्यालयों को भेज दी जाय :

(1) लोक सभा सचिवालय (2) राज्य सभा सचिवालय (3) प्रधान मंत्री सचिवालय (4) मंत्रिपरिषद सचिवालय (5) योजना आयोग (6) राष्ट्रपति जी के निजि और सैनिक सचिवों (7) भारत सरकार के महानियंत्रक एवं लेखापरीक्षक (8) भारत सरकार के समस्त मंत्रालय और विभाग (9) समस्त राज्य सरकारें। संघ शासित क्षेत्र (10) महालेखाकार केन्द्रीय राजस्व, नई दिल्ली (11) परमाणु विभाग (12) भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली (13) वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली। (14) केन्द्रीय जन-स्वास्थ्य इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान, नागपुर (15) अखिल भारतीय स्वास्थ्य एवं जनस्वास्थ्य संस्थान, कलकत्ता (16) केन्द्रीय जनस्वास्थ्य इंजीनियरिंग संगठन और (17) स्वास्थ्य सेवाओं के महानिदेशक, नई दिल्ली।

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाय।

अमिय भूषण मलिक, संयुक्त सचिव

शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय

(शिक्षा विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 15 नवम्बर 1972

सं० एफ० 1-2/72-वाई० एस० 1(2)—इस मंत्रालय की अधिसूचना सं० एफ० 1-2/72-वाई० एस० 1(2), दिनांक 2 मई, 1972 के द्वारा स्थापित की गई परिषद् की कार्यकारिणी समिति में अखिल भारतीय खेल परिषद् के निम्नलिखित सदस्यों

को 1-5-1972 से एक वर्ष की अवधि तक के लिए एतद् द्वारा मनोनीत किया जाता है :—

1. श्री जुल्फीकार अली खां, संसद सदस्य
2. श्री बयालार रवि, संसद् सदस्य ।
3. श्री के० पी० सिंह देव, संसद् सदस्य ।

कांति चौधरी, संयुक्त सचिव

(संस्कृति विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 27 नवम्बर 1972

सं० 22/2/72-सी० ए० 1(2)—भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग के पुनर्गठन के संबंध में भारत सरकार, संस्कृति विभाग के संकल्प संख्या एफ० 22-7/69-सी० ए० 1 (2) दिनांक 10 मार्च, 1972 को पैरा 3(1) के अनुसरण में निम्नलिखित व्यक्तियों को 26 सितम्बर, 1972 से पांच वर्षों की अवधि के लिए उक्त आयोग के सदस्यों के रूप म नियुक्त किया जाता है :—

सदस्य:

(1) विधान की पैरा 3-I ए० (1) के अधीन

सचिव, भारत सरकार, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय तथा संस्कृति विभाग।

(2) विधान की पैरा 3-I ए० (2) के अधीन

1. प्रो० एम० मुजीब,
   कुलपति, जामिया मिलिया इस्लामिया,
   नई दिल्ली-25।
2. प्रो० एन० आर० रे०,
   57, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली-3।
3. प्रो० एस० गोपाल,
   इतिहास के प्रोफेसर,
   जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
   न्यू मेहरोली रोड, नई दिल्ली-57।
4. प्रो० पी० सी० गुप्त,
   कुलपति,
   विश्व भारती, शान्ति निकेतन,
   (जिला बिरभूम) पश्चिम बंगाल।
5. प्रो० बी० पी० सक्सेना,
   35, छठ्ठम लाइंस,
   इलाहाबाद-2।
6. डा० पी० बासु,
   ए० 2/48, सफदरजंग डेवलपमेन्ट एरिया,
   नई दिल्ली-16।
7. प्रो० जी० एम० मोरिस,
   निदेशक,
   ऐतिहासिक अनुसंधान संस्थान,
   जसविला, एफ० एल० 2, 9, न्यू मेरिन लाइंस,
   बम्बई-20 बी० आर०
8. प्रो० विशेश्वर प्रसाद,
   34, छठ्ठम लाइंस,
   इलाहाबाद-2।
9. प्रो० जी० एस० दीक्षित,
   विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के
   इतिहास के प्रोफेसर,
   कर्नाटक विश्वविद्यालय,
   1, नवोदय कालोनी, धारवार-3 (मैसूर)।
10. डा० रघुबीर सिंह,
    "रघुबीर निवास" सीतामऊ,
    (मध्य प्रदेश)।
11. प्रो० अम्बा प्रसाद,
    इतिहास के प्रोफेसर,
    दिल्ली विश्वविद्यालय,
    दिल्ली ।
12. डा० पार्थसारथी गुप्त,
    इतिहास में रीडर,
    दिल्ली विश्वविद्यालय,
    दिल्ली-7।

(3) विधान की खण्ड 3-I ए० (3) के अधीन

1	आन्ध्र प्रदेश	डा० (कुमारी) सरोजिनी रेगानी, निदेशक, राज्य अभिलेखागार, तरनाका, हैदराबाद-7 (आन्ध्र प्रदेश)
2	जम्मू और काश्मीर	श्री एफ० एम० हुसनैन, निदेशक, राज्य अभिलेखागार विभाग, (पुराना सचिवालय), श्रीनगर।
3	महाराष्ट्र	श्री बी० जी० खोब्रेकर अभिलेखागार और पुरातत्व निदेशक, एलफिनस्टान कालेज भवन, बम्बई-32 (बी० आर०)
4	पंजाब	डा० बख्शीश सिंह निज्जर, अभिलेख अधिकारी, अभिलेखागार विभाग पंजाब, पटियाला ।
5	तमिल नाडु	थिरू एस० सिंगारावेलन, अभिलेखागार निदेशक, तमिल नाडु अभिलेखागार, मद्रास-8।
6	पश्चिम बंगाल	श्री टी० के० मुखर्जी, सहायक अभिलेखागार निदेशक, राज्य अभिलेखागार शाखा, 6, भवानी दत्त लेन, कलकत्ता-7।

7	असम	श्री पी० सी० शर्मा, अभिलेख कीपर, असम सचिवालय अभिलेख कार्यालय, शिलांग-1 ।
8	केरल	श्रीमती पद्मा रामचन्द्रन, शिक्षा सचिव और पदेन अभिलेखागार निदेशक, अभिलेखागार निदेशालय, त्रिवेन्द्रम-1 (केरल)
9	उड़ीसा	श्री एम० पी० दास, अधीक्षक, उड़ीसा राज्य अभिलेखागार, भुवनेश्वर (उड़ीसा) ।
10	उत्तर प्रदेश	डा० के० पी० श्रीवास्तव, अभिलेखागार कीपर, राज्य अभिलेखागार, उत्तर प्रदेश, 53, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-1 (उ० प्र०) ।
11	मैसूर	डा० एस० बी० वेसिकाचार, विशेष अधिकारी, राज्य अभिलेखागार निदेशालय, शिक्षा और युवक सेवा विभाग, मैसूर सरकार सचिवालय, विधान सौधा, बंगलोर (मैसूर) ।
12	गुजरात	डा० जी० डी० पटेल, मुख्य संपादक, "गुजरात गजिटियर्स" और गुजरात राज्य अभिलेखागार प्रभारी 52, श्रीमाली हाऊसिंग सोसायटी, नवरंगपुरा, अहमदाबाद-9 (गुजरात) ।
13.	हरियाणा	श्री एस० के० मिश्र, आई० ए० एस०, आयुक्त और सचिव, हरियाणा सरकार तथा राज्य अभिलेखागार प्रभारी, हरियाणा, चण्डीगढ़ ।

4. पैरा 3-I ए० (4) के अधीन उन राज्य सरकारों के मनोनीत व्यक्ति (जिनके पास सुव्यस्थित अभिलेख भण्डार नही हैं किन्तु क्षेत्रीय अभिलेख सर्वेक्षण समितियां हैं) ।

1. डा० हीरालाल चट्टर्जी,
प्रिंसिपल, महिला कालेज,
त्रिपुरा सरकार,
अगरतला (त्रिपुरा) ।

2. श्री टी० एन० चतुर्वेदी,
मुख्य सचिव, दिल्ली प्रशासन,
5, अलीपुर रोड, दिल्ली-1 ।

3. श्री जे० एन० गुप्त,
सचिव (जी० ए०) ;
अरुणाचल प्रदेश प्रशासन,
शिलांग ।

5. **पैरा 3-I ए० (5) के अधीन विश्वविद्यालयों के मनोनीत व्यक्ति**

1. प्रोफेसर एस० शेत्तार,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
कर्नाटक विश्वविद्यालय,
धरवार-3 (मैसूर) ।

2. प्रो० डी० एन० शुक्ल,
मध्यकालीन और आधुनिक इतिहास के विभागाध्यक्ष,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद - 2 ।

3. प्रो० बी० आर० ग्रोवर,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
जामिया मिलिया इस्लामिया,
जामियानगर, नई दिल्ली - 25 ।

4. प्रो० वी० एन० दत्त,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा) ।

5. प्रो० पी० एल० मेहरा,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ - 14 ।

6. प्रो० आर० नरसिम्ह राव,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
विश्वविद्यालय कला और वाणिज्य कालेज,
उस्मानिया विश्वविद्यालय,
हैदराबाद-7 (आन्ध्र प्रदेश) ।

7. प्रो० एस० सी० मिश्र,
कला संकाय के इतिहास के विभागाध्यक्ष,
महाराज सयंजीराव बड़ौदा विश्वविद्यालय,
बड़ौदा-2 (गुजरात) ।

8. प्रो० सीताराम सिंह,
विश्वविद्यालय के इतिहास के विभागाध्यक्ष,
एल० एस० कालेज, बिहार विश्वविद्यालय,
मुज्जफरपुर (बिहार) ।

9. प्रो० आर० एस० गुप्त,
प्राचीन भारतीय संस्कृति तथा इतिहास के विभागाध्यक्ष,
मराठा वाडा विश्वविद्यालय,
औरंगाबाद (दक्कन) (महाराष्ट्र) ।

10. प्रो० ए० सी० बनर्जी,
इतिहास विभाग,
जादवपुर विश्वविद्यालय,
कलकत्ता - 32 ।

11. प्रो० के० ए० निजामी,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,
अलीगढ़ ।

12. प्रो० ए० आर० कुलकर्नी,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
पूना विश्वविद्यालय,
पूना - 6 ।

13. प्रो० डी० पी० सिन्हा,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय,
राजा राम मोहनपुर,
सिलीगुड़ी, (पश्चिम बंगाल) ।

14. प्रो० ए० सी० बोस,
इतिहास के स्नातकोत्तर विभाग के अध्यक्ष,
जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू (जम्मू और काश्मीर) ।

15. प्रो० पी० एन० मिश्र,
इतिहास के स्नातकोत्तर विभाग के अध्यक्ष,
भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर-7 (बिहार) ।

16. प्रो० वी० पी० मिश्र,
इतिहास के प्रोफेसर,
इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली - 7 ।

17. प्रो० टी० के० रवीन्द्रन,
विश्वविद्यालय के इतिहास के विभागाध्यक्ष,
केरल विश्वविद्यालय,
त्रिवेन्द्रम (केरल) ।

18. प्रो० वी० एम० रेड्डी,
इतिहास के प्रोफेसर,
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,
तिरुपति (आन्ध्र प्रदेश) ।

19. प्रो० एस० एल० बरुआ,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय,
डिब्रूगढ़ (असम) ।

20. प्रो० हरि शंकर श्रीवास्तव,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) ।

21. प्रो० आर० एन० नागर,
मध्यकाल और आधुनिक इतिहास के प्रोफेसर,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ - 7 ।

22. प्रो० एच० एल० सिंह,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय,
वाराणसी - 5 ।

23. प्रो० एच० के० बरपुजारी,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
गोहाटी विश्वविद्यालय,
गोहाटी (असम)

24. डा० आर० के० धारिया,
इतिहास में लेक्चरर,
गुजरात विश्वविद्यालय,
अहमदाबाद -9 (गुजरात) ।

25. प्रो० अमालेस त्रिपाठी,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
कलकत्ता विश्वविद्यालय,
कलकत्ता - 12 ।

26. प्रो० एच० एल० गुप्त,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
सागर विश्वविद्यालय,
सागर (मध्य प्रदेश) ।

27. डा० ए० आर० जी० तिवाड़ी,
रीडर तथा इतिहास के स्नातकोत्तर विभाग के अध्यक्ष,
सरदार पटेल विश्वविद्यालय,
बल्लभ विद्यानगर पश्चिमी रेलवे (गुजरात) ।

28. डा० ए० जी० पवार,
कुलपति,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
विद्यानगर, कोलहापुर - 4 ।
(महाराष्ट्र) ।

29. प्रो० डी० आर० सरदेसाई,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
बम्बई विश्वविद्यालय,
विश्वविद्यालय कैम्पस, कालिना,
सी० एस० टी० रोड, (मनीपडा)
शान्ताक्रुज (पूर्व) —बम्बई - 29 ।

30. प्रो० वी० के० आप्टे,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
नागपुर विश्वविद्यालय, मानविकी भवन,
विश्वविद्यालय कैम्पस,
अमरावती रोड, नागपुर ।

31. प्रो० आर० एम० सिन्हा,
इतिहास में अनुसन्धान और स्नातकोत्तर अध्ययन के
विश्वविद्यालय के विभाग के अध्यक्ष,
जबलपुर विश्वविद्यालय,
जबलपुर (मध्य प्रदेश) ।

32. प्रो० वी० एस० माथुर,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
उदयपुर विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)।

33. प्रो० दलीप कुमार घोष,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
बुरदवान विश्वविद्यालय,
बुरदवान (पश्चिम बंगाल)।

34. प्रो० वीराथप्पा,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
सेन्ट्रल कालेज (बंगलौर विश्वविद्यालय),
बंगलौर - 1।

35. प्रो० फोजा सिंह,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब)।

36. प्रो० जी० सी० पाण्डे,
इतिहास और भारतीय संस्कृति के विभागाध्यक्ष,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर (राजस्थान)।

37. प्रो० जे० एस० ग्रेवाल,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
गुरु नानक विश्वविद्यालय,
अमृतसर (पंजाब)।

38. प्रो० ए० सी० श्रीवास्तव,
इतिहास के प्रोफेसर,
टी० आर० एस० कालेज,
(अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय)
रेवा (म० प्र०)।

39. प्रो० वी० एन० लूनिया,
प्रिंसिपल और इतिहास के प्रोफेसर,
राजकीय कला और वाणिज्य कालेज,
इंदौर विश्वविद्यालय,
आगरा—बम्बई रोड, इंदौर (म० प्र०)

40. प्रो० ओ० पी० भटनागर,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
विश्वविद्यालय अध्यापन विभाग,
रविशंकर विश्वविद्यालय,
रायपुर (म० प्र०)।

41. प्रो० नवीन कुमार साहु,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
साम्बलपुर विश्वविद्यालय, साम्बलपुर
(उड़ीसा)।

42. प्रो० बी० आर० चटर्जी,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
मेरठ कालेज (मेरठ विश्वविद्यालय)
मेरठ (उ० प्र०)।

43. प्रो० वी० वी० लाल,
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व में
अध्ययन के स्कूल के विभागाध्यक्ष,
जिवाजी विश्वविद्यालय,
ग्वालियर (म० प्र०)।

44. प्रो० वी० के० सिंह,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
राजकीय हमीदिया कालेज,
(भोपाल विश्वविद्यालय),
भोपाल (म० प्र०)।

45. प्रो० आर० पी० व्यास,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
जोधपुर विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राजस्थान)।

46. प्रो० वी० जी० शर्मा,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
माधव कालेज (विक्रम विश्वविद्यालय),
उज्जैन (म० प्र०)।

47. प्रो० महिब्बुल हसन,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
काश्मीर विश्वविद्यालय, (विश्वविद्यालय कैम्पस),
हजरतबल, श्रीनगर (जम्मू और काश्मीर)

48. प्रो० एस० आर० मेहरोत्रा,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
शिमला - 5।

49. डा० आर० जी० पारिख,
इतिहास में रीडर,
स्नातकोत्तर इतिहास केन्द्र, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय,
कविश्री मानालाल मार्ग, धर्मपुर हाऊस,
राजकोट - 1, (गुजरात)।

50. प्रो० शेख अली,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
मैसूर विश्वविद्यालय,
मंसा गंगोत्री, मैसूर - 6।

51. प्रो० वी० पी० पन्थारी,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
काशी विद्यापीठ, वाराणसी - 2।

52. प्रो० रामलाल पारिखा,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
गुजरात विद्यापीठ,
अहमदाबाद - 14 (गुजरात)।

53. प्रो० के० आर० हनुमंथन,
इतिहास के मुख्य प्रोफेसर,
प्रेजीडेन्सी कालेज, मद्रास विश्वविद्यालय,
मद्रास - 5।

54. प्रो० श्याम बिहारी सिंह,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
मगध विश्वविद्यालय, बोध गया,
बिहार ।

55. डा० बी० ए० नारायण,
इतिहास में रीडर,
पटना विश्वविद्यालय,
पटना - 5 ।

56. डा० एस० भट्टाचार्य,
सहायक प्रोफेसर,
ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र,
सामाजिक विज्ञान स्कूल,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
न्यू महरोली रोड, नई दिल्ली - 57 ।

57. प्रो० डी० बाल सुब्रमण्यम्,
इतिहास और राजनीति विभाग के अध्यक्ष,
अन्नामलाई, विश्वविद्यालय,
अन्नामलाईनगर (तमिल नाडु) ।

58. प्रो० एस० के० सेन,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
रविन्द्र भारती विश्वविद्यालय,
6/4, द्वारकानाथ टैगोर लेन,
कलकत्ता - 7 ।

59. प्रो० ई० सूर्यनारायनामूर्ति,
इतिहास और पुरातत्व के विभागाध्यक्ष,
आन्ध्र विश्वविद्यालय कला कालेज,
आन्ध्र विश्वविद्यालय,
वालटेयर (आन्ध्र प्रदेश) ।

6. पैरा 3 I ए (6) के अधीन शैक्षिक संस्थाओं के मनोनीत व्यक्ति

1. डा० ब्रिजेन्द्र त्रिपाठी,
इतिहास के प्रोफेसर,
भारतीय प्रबंध संस्थान,
बसत्रापुर, अहमदाबाद - 15 ।

2. विद्यारत्न पण्डितराज श्री आर० जी० पंचमुखी,
मुख्य सम्पादक तथा उपाध्यक्ष,
कर्नाटक ऐतिहासिक अनुसंधान सोसायटी,
धारवाड़ - 1 (मसूर) ।

3. श्री वी० आर० नंदा,
निदेशक,
नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय,
तीन मूर्ति भवन,
नई दिल्ली - 11 ।

4. श्री एस० ए० अली,
निदेशक,
भारतीय मुस्लिम अध्ययन संस्थान,
पंचकुंया रोड, नई दिल्ली - 1 ।

5. डा० पी० एन० चोपड़ा,
सम्पादक,
गजेटियर, यूनिट,
शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय,
(संस्कृति विभाग)
शास्त्री भवन, नई दिल्ली - 1 ।

6. प्रो० एस० ए० उपाध्याय,
संयुक्त निदेशक शैक्षिक
भारतीय विद्या भवन, चोपाटी रोड,
बम्बई - 7 ।

7. डा० गोपाल कृष्ण,
केन्द्र के वरिष्ठ अनुसंधान फैलो,
विकासशील समितियों के अध्ययन हेतु केन्द्र,
29., राजपुर रोड, दिल्ली - 6 ।

8. डा० के० एन० पाण्डे,
निदेशक,
ऐतिहासिक अनुभाग, रक्षा मंत्रालय,
पश्चिम ब्लाक-8, विंग संख्या 1, आर० के० पुरम,
नई दिल्ली - 22 ।

9. प्रो० एस० पी० सेन,
निदेशक,
ऐतिहासिक अध्ययन संस्थान,
35, थियेटर रोड, (शेक्सपीयर सारणी),
कलकत्ता - 17 ।

10. प्रो० जागीर सिंह भूल्लर,
इतिहास के विभागाध्यक्ष,
(सिक्ख इतिहास अनुसंधान विभाग),
खालसा कालेज, अमृतसर (पंजाब) ।

11. रेव एन्थोनी डी कोटा,
निदेशक,
हर्ष भारतीय इतिहास और संस्कृति संस्थान,
सेंट एक्सेवियर कालेज,
बम्बई - 1 (बी० आर०)

12. प्रो० एस० के० सरस्वती,
एशियाई सोसायटी,
1, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता - 14 ।

13. डा० जी० टी० कुलकर्नी,
दक्कन कालेज स्नातकोत्तर तथा अनुसंधान संस्थान,
पूना - 6 ।

14. डा० जे० एस० झा,
के० पी० जायसवाल अनुसंधान संस्थान,
संग्रहालय भवन,
पटना - 1 (बिहार)

15. श्री जी० एस० खरे,
भारत इतिहास संशोधक मण्डल,
1321, सदाशिव पेंठ,
पूना-30

16. श्री बी० के० बासु,
निदेशक,
ऐतिहासिक प्रभाग (विदेश मंत्रालय),
पटियाला भवन, उप भवन 'बी',
नई दिल्ली

17. श्री जी० नाथ,
निदेशक,
भारतीय सार्वजनिक प्रशासन संस्थान,
इन्द्रप्रस्थ इस्टेट, रिंग रोड,
नई दिल्ली-1

18. डा० दुर्गाप्रसाद भट्टाचार्य,
सामाजिक-आर्थिक अनुसंधान संस्थान,
जनसंख्या पूर्व गणना अध्ययन एकक,
भारतीय सांख्यिकी संस्थान,
203, बैरकपुर ट्रंक रोड, कलकत्ता-35

19. प्रो० कालीचरन करमाकर,
उप निदेशक,
चन्द्र नगर संस्थान, रेजीडेन्सी पी० ओ० चन्द्रनगर,
जिला हुगली (पश्चिम बंगाल)।

20. डा० वी० जी० डिगे,
बम्बई एशियाई सोसायटी,
(टाउन हाल), बम्बई-1।

21. श्री डी० आर० भट्ट
क्यूरेटर,
आई० वी० के० राजवाडे संशोधन मंडल,
चतुर्थ लेन, धुलिया (महाराष्ट्र)।

22. प्रो० त्रिदिव नाथ राय,
बंगिला साहित्य परिषद्
243/1, आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र रोड,
कलकत्ता-6।

23. प्रो० सतीश चन्द्र,
सचिव,
भारतीय इतिहास कांग्रेस,
द्वारा ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र,
जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय,
न्यू महरोली रोड,
नई दिल्ली-57।

24. डा० (कुमारी) एच० के० नक्वी,
अतिथि फेलो,
भारतीय उच्चतर अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास,
शिमला-5 (हिमाचल प्रदेश)।

25. प्रो० बरुन दे,
सामाजिक और आर्थिक इतिहास के वरिष्ठ प्रोफेसर,
भारतीय प्रबंध संस्थान,
56-ए०, बी० टी० रोड,
कलकत्ता-50।

पी० सोमासेखरन, उप सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 27 नवम्बर 1972

सं० एफ० 22-5/72-सी०ए० 1(2)—भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग की स्थायी समिति के गठन के संबंध में भारत सरकार, संस्कृति विभाग के संकल्प संख्या 22-7/69-सी०ए० 1(2) दिनांक 10 मार्च, 1972 के अनुसरण में, निम्नलिखित व्यक्तियों को दो वर्षों की अवधि के लिए स्थायी समिति में कार्य करने हेतु नियक्त किया जाता है :—

1.	सचिव, भारत सरकार, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय (संस्कृति विभाग)	अध्यक्ष (पदेन)
2.	प्रो० एन० आर० रे, 57, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली-3	सदस्य
3.	प्रो० सतीश चन्द्र, सचिव, भारतीय इतिहास कांग्रेस, द्वारा ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, न्यू महरोली रोड, नई दिल्ली-57	सदस्य
4.	प्रो० शेख अली, इतिहास के विभागाध्यक्ष, मैसूर विश्वविद्यालय, मंसागंगोत्री, मैसूर-6	सदस्य
5.	प्रो० ओ० पी० भटनागर, 4-डी०, बैंक रोड, इलाहाबाद - 2	सदस्य
6.	श्री वी० जी० खोब्रेकर, अभिलेखागार और पुरातत्व निदेशक, (महाराष्ट्र सरकार), बम्बई - 32 (बी० आर०)	सदस्य
7.	अभिलेखागार निदेशक, भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।	सचिव (पदेन)

ए० एस० तलवार, अवर सचिव

सिंचाई और विद्युत् मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 28 नवम्बर 1972

संकल्प

सं० वि० दी० 1(3)/72—इस मंत्रालय के संकल्प सं० वि० दो०-1(3)/72 दिनांक 20 सितम्बर 1972 में निम्नलिखित पैरा जोड़ दिया जाए :—

"3. समिति के सदस्य, समिति की बैठकों में उपस्थित होने के लिए भारत सरकार द्वारा समय समय पर नियत की गई दरों पर यात्रा भत्ता तथा दैनिक भत्ता लेंगे ।"

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रतियां सभी राज्य सरकारों, संघ राज्य क्षेत्रों और राज्य बिजली बोर्डों को व्यापक प्रचार करने के हेतु भेज दी जाएं ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाए ।

श्री ना० विंझे, संयुक्त सचिव

श्रम और पुनर्वास मंत्रालय

(श्रम और रोजगार विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 22 नवम्बर 1972

संकल्प

सं०डी०जी०ई०टी०ई०ई० 1-200(II)/72—भारत के राजपत्र असाधारण भाग I, खण्ड 1 दिनांक 19 दिसम्बर, 1970 में प्रकाशित भारत सरकार के संकल्प संख्या एम०पी० 10(110)/69 दिनांक 19 दिसम्बर, 1970 द्वारा स्थापित समिति की अवधि जो संकल्प संख्या ई०ई० 1-200/3/71 दिनांक 20 दिसम्बर, 1971 द्वारा 31 अक्तूबर, 1972 तक बढ़ा दी गई थी, एतद्-द्वारा और आगे 28 फरवरी, 1973 तक बढ़ाई जाती है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत के राजपत्र के भाग I, खण्ड 1 में प्रकाशित किया जाए ।

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक एक प्रति भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों, राज्य सरकारों/संघीय क्षेत्रों तथा अन्य सभी संबंधित पक्षों को भेजा जाए ।

पी० एम० नायक, सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 4th December 1972

No. 123-*Pres.*/72.—The President is pleased to approve the award of the MAHA VIR CHAKRA for acts of conspicuous gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Brigadier KAILAS PRASAD PANDE (IC-4128), Regiment of Artillery.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Brigadier Kailas Prasad Pande was Commanding a Mountain Brigade. The Brigade was assigned the task of clearing the enemy of a well fortified position in the Eastern Sector. The task was successfully completed mainly due to Brigadier Pande's inspiring leadership. He was always well forward, unmindful of his safety, encouraging troops and directing the battle. His Brigade was given a number of ther important and difficult tasks which were also completed successfully. The Brigade group advanced forty miles in seventy two hours; effectively bottling up the enemy and capturing key posts. When lodgement was attained in the fortress of Mynamati defences the Brigade was subjected to determined enemy attacks supported by tanks; against all this relentless pressure of the enemy the Brigade held on to the defence until the time of surrender by enemy commander.

Throughout the operations, Brigadier Kailas Prasad Pande displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a very high order.

2. Lieutenant Colonel NARINDER SINGH SANDHU (IC-6638), Dogra Regiment.

(*Effective date of award—5th December* 1971)

On the night of the 5th/6th December 1971, Lieutenant Colonel Narinder Singh Sandhu, who was commanding a Battalion of the Dogra Regiment was given the task of capturing an enemy position in this Western Sector. The enemy defences were extensively fortified with an elaborate system of pill boxes with machine guns and anti-tank weapon emplacements which were connected to each other by a tunnelling system. The capture of the enemy defended localities was an uphill task. During the attack all along the route, Lieutenant Colonel Sandhu remained foremost. As soon as the objective was captured, he was there personally to guide and help in the reorganisation. In spite of the fact that he had got a bullet injury in his leg, he continued to lead his men without any regard for his safety.

In this operation, Lieutenant Colonel Narinder Singh Sandhu displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a very high order.

3. Lieutenant Colonel ARUN BHIMRAO HAROLIKAR (IC-7916), 5th Gorkha Rifles.

Lieutenant Colonel Arun Bhimrao Harolikar, who was Commanding a Battalion of the 5th Gorkha Rifles, was given the task of capturing an enemy position in the Eastern Sector. The enemy held a well fortified position with two companies covering all approaches. When two assaulting companies were held up due to intense enemy fire, Lieutenant Colonel Harolikar led the remaining Battalion into assault along a difficult approach, behind the enemy. On the objective, he personally took part in hand to hand fighting and it was mainly due to him that the Battalion captured the enemy position. The capture of this position resulted in the liberation of a large part of the Pakistan occupied area and facilitated further operations by the Brigade group. Later during the operations, he captured another enemy position. On the 7th December 1971 after the landing by helicopters of his Battalion in Sylhet, his defensive position was subjected to a series of well-coordinated counter-attacks by the enemy. He repulsed the enemy attacks till the time Brigade link up was successfully completed. The resolute action fought by the Battalion under his inspiring leadership broke the enemy's will to resist resulting in early surrender of the entire garrison of several thousand enemy personnel.

Throughout the operations, Lieutenant Colonel Arun Bhimrao Harolikar displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a very high order.

No. 124-*Pres.*/72.—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Lieutenant Colonel AMARJEET SINGH BRAR (IC-7814), Rajputana Rifles.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Lieutenant Colonel Amarjeet Singh Brar, who was commanding a Battalion of the Rajputana Rifles(was given the task of capturing an important enemy position in the Eastern Sector. Against heavy odds the attack was successfully carried out and the position was held against fierce enemy counter attacks. On the 6th December 1971, the battalion surprised the enemy and drew out all their troops enabling the neighbouring formation to occupy that position without firing a single round. Again, on the 9th December 1971, the Battalion captured the formidable Mynamati defences and held on against fierce enemy counter attack supported by tanks.

Throughout, Lieutenant Colonel Amarjeet Singh Brar displayed gallantry, leadership, devotion to duty of a high order.

2. Major MAHMOOD HASAN KHAN (IC-18691), Grenadiers. (*posthumous*)

(*Effective date of award—6th December* 1971)

During the operations against Pakistan in December 1971, Major Mahmood Hasan Khan was the Commander of a Company of a Battalion of the Grenadiers which was given the task of raiding an enemy locality in the Jammu and Kashmir Sector. The raid involved move through heavily guarded area and destruction of the objective of platoon strength. Major Mahmood Hasan Khan led his men on to the objective by shrewd manoeuvres destroying post after post. The raid was thus successfully carried out after twelve hours of constant action.

In this action, Major Mahmood Hasan Khan displayed gallantry and leadership and made the supreme sacrifice for the call of duty in keeping with the best traditions of the Indian Army.

3. Major TARSEM LAL SHARMA (IC-20832), Rajput Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of the award—9th December* 1971)

Major Tarsem Lal Sharma who was serving with a Battalion of the Rajput Regiment, was assigned the task of capturing an enemy position in the Eastern Sector. He achieved complete surprise and forced the enemy to withdraw. He kept on advancing against an enemy in much larger strength. Due to the impact of this attack, the enemy in his panic blew up a Bridge leaving a Battalion plus the main Headquarters of an Infantry Division trapped on our side of the river. A little later the enemy launched a counter attack with two tanks. He continued to hold his ground till he was hit by a bullet of Machine Gun fire as a result of which he died.

In this action, Major Tarsem Lal Sharma displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

4. Major LALIT MOHAN BHATIA (IC-16165), Rajput Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of the award—14th December* 1971)

On the night of the 13th/14th December 1971, Major Lalit Mohan Bhatia, who was serving with a Battalion of the Rajput Regiment, was given the task of capturing a Pakistani Outpost in the Fazilka Sector. As he manoeuvred his Company on to the objective, it came under cross fire of light and heavy automatic weapons. Undeterred, he led the charge, Bayonetted two Pakistanis and silenced the Light Machine Gun Bunker. In hand to hand fight, he received fatal injuries due to enemy bayonets. His personal example inspired his Company to victory capturing two enemy tanks and a large quantity of arms ammunition, equipment and prisoners including two officers.

In this action, Major Lalit Mohan Bhatia displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

5. Major AMLAN PRATAP DATTA (IC-12859), 9th Gorkha Rifles.

Major Amlan Pratap Datta was commanding a Company of a Battalion of the 9th Gorkha Rifles which launched an attack in an area in the Eastern Sector. During the advance to the Start Line, two of his platoons were channelised to the Right flank and radio contact was lost due to heavy enemy fire. He, however, moved forward with his Company Headquarters and the third platoon. When the advance of the Company was losing its momentum due to enemy small arms fire, Major Amlan Pratap Datta charged the enemy position. This encouraged the men under his command and they charged on with renewed vigour. This action forced the enemy to run way from the objective.

In this action, Major Amlan Pratap Datta displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

6. Major SURINDER SINGH JAMWAL (IC-14374), Dogra Regiment.

(*Effective date of the award—16th December* 1971)

On the 16th December 1971, the task of clearing enemy defences in an area in the Eastern Sector was given to a Battalion of the Dogra Regiment. In this attack, Major Surinder Singh Jamwal was commanding a Company. He led his men under very heavy enemy artillery and small arms fire. After over-running a Company of the enemy, he was confronted with yet another locality from where heavy volume of fire was coming. Unmindful of the reduced strength due to casualties, he rallied his men around and launched an attack on this locality. He charged the objective and overran this locality and also captured a large number of Pakistani troops.

In this action, Major Surinder Singh Jamwal displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

7. Major BALDEV RAJ BHOLA (SS-18854), Dogra Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—16th December* 1971)

Major Baldev Raj Bhola, who was commanding a Company of a Battalion of the Dogra Regiment, was ordered to assault a well fortified enemy position in the Eastern Sector. During advance, the Company came under heavy and effective fire of enemy artillery and heavy machine gun. Under the inspiring leadership of Major Baldev Raj Bhola, the Company continued advancing against heavy odds. Major Beldev Raj Bhola got injured but, undeterred, he continued. As he neared the objective, a heavy machine gun fire made it impossible for the Company to advance any further. By quick appreciation Major Baldev Raj Bhola decided and acted on silencing it. He rushed to the machine gun post, lobbed two grenades on it and silenced it. In the process he was hit by enemy fire, as a result of which he died.

In this action, Major Baldev Raj Bhola displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

8. Major KAILIANA LUSHAI (IC-17484), Kumaon Regiment.

Major Kailiana Lushai, who was commanding a Company of a Battalion of the Kumaon Regiment, was ordered to capture a well fortified enemy position, consisting of a net-work of bunkers, in the Eastern Sector. On the night before the attack, he crawled up to the enemy defences and had a close look in spite of enemy being on alert. Next night he led his Company into the assault. The enemy brought down heavy artillery and medium machine gun fire on the Company. Although Major Lushai was injured in his leg and arm, he continued to inspire his men and directed the successful capture of a foothold in the main defences after about eleven hours of continuous fighting. Several enemy attacks to dislodge them were also successfully beaten back under his able leadership.

In this action, Major Kailiana Lushai displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

9. Major NARINDER KUMAR SHARMA (IC-22596), Kumaon Regiment.

During the operations against Pakistan in December 1971, in the Eastern Sector, Major Narinder Kumar Sharma, who was serving with a Battalion of the Kumaon Regiment, was leading the advance of the Battalion. The advance was held up due to effective fire by the enemy. Major Sharma after collecting information about the enemy position took on a bigger task then normally assigned for the force under his command. He so successfully planned the operation and led the assault that very soon his Company was in hold of a part of the objective. He charged from bunker to bunker with his men neutralising them till an obstacle made it impossible to proceed. Soon tanks were ordered to clear the rest of the position. To make the job easier and faster for them, he directed the tanks standing in the open unmindful of enemy artillery and small arms fire.

In this action, Major Narinder Kumar Sharma displayed gallantry, leadership, professional skill and devotion to duty of a high order.

10. Major VINOD BHANOT (IC-15906), Gorkha Rifles.

(*Effective date of the award—16th December* 1971)

On the night between the 16th/17th December 1971, Major Vinod Bhanot, who was commanding a Company of a Battalion of the Gorkha Rifles, was assigned the task of capturing an enemy post in the Kargil Sector. He planned to approach the post from the rear along a most difficult and unexpected route. The advance was slow because of the difficult terrain. Enemy was able to bring down effective fire on the advancing column. Under his inspiring leadership, the advance was continued. On nearing the objective, Major Bhanot rushed to the machine gun post, which was causing the maximum

hinderance and neutralised that single-handed. The foothold thus gained was exploited with speed and the position captured after a fierce battle. Though completely exhausted, he also captured all the adjoining enemy positions.

In this action, Major Vinod Bhanot displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

11. Major APPASAHEB DADASAHEB SURVE (IC-13403),
9th Gorkha Rifles.

(Effective date of the award—15th December 1971)

Major Appasaheb Dadasaheb Surve was commanding a Company of Gorkha Rifles which was the right hand forward Company in the first phase of the Battalion attack on area Chairana in the battle of Shakargarh. He led his Company with courage and in utter disregard to his personal life and captured a well coordinated enemy defensive position which included numerous medium machine gun bunkers and minefield. He held his position despite two determined enemy counter-attacks and heavy casualties to his side. At about 0200 hours on 15th December 1971, the position became untenable and the Commanding Officer ordered him to extricate. During disengagement, he stayed back and gave covering fire himself. At this stage, he was hit in his thigh with a burst from an enemy Medium Machine Gun and was grievously hurt. He continued to engage the enemy till his men extricated. By his personal courage and tenacity, he infused in his men the determination to hold on to the objective in spite of depleted strength and under heavy enemy fire.

In this action, Major Appasaheb Dadasaheb Surve displayed gallantry and leadership of a high order.

12. Captain PRASANTA KUMAR GHOSH (IC-15842), Signals.

During the operations against Pakistan in December 1971, Captain Prasanta Kumar Ghosh was assigned a difficult task in the Eastern Sector which he completed successfully. He established road blocks, intercepted several enemy convoys and inflicted casaulties on enemy men and equipment, thereby disrupting the smooth movement of the enemy.

Throughout, Captain Prasanta Kumar Ghosh displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

13. Captain KULDIP SINGH RATHI (IC-19844), Jat Regiment. *(Posthumous)*

During the operations against Pakistan in December 1971, Captain Kuldip Singh Rathi was the Adjutant of a Battalion of the Jat Regiment which was holding an important position in the Poonch Sector. The enemy built up a heavy pressure on this position threatening to assault it. Captain Kuldip Singh Rathi took a handful of men and assaulted on the flank of the advancing enemy. By this courageous action, the attack was foiled. The enemy reorganised for a fresh attack and brought down heavy artillery fire on the positon Captain Rathi moved from trench to trench inspiring his men to repulse the attack. In the process he was hit by enemy artillery shell, as a result of which he died.

In this action Captain Kuldip Singh Rathi displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

14. Captain SHEO GANESH SINGH (IC-18968), Artillery, *(Posthumous)*

(Effective date of the award—7th December 1971)

Captain Sheo Ganesh Singh was the affiliated observation post officer with a Battalion of the Dogra Regiment which was ordered to capture an important position in the Western Sector. The Battalion came under effective artillery and machine gun fire in the initial stages of the assault. Captain Sheo Ganesh Singh, unmindful of his safety, moved from one point to another effectively neutralising the enemy guns. Although injured, he continued to carry out his task effectively till he was mortally wounded.

In this action, Captain Sheo Ganesh Singh displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

15. Captain DHAN SINGH ADHIKARI (SS-22082), Dogra Regiment.

*(Effective date of the award—*13th *December* 1971)

During the operations against Pakistan in December 1971, Captain Dhan Singh Adhikari, was serving with a Battalion of the Dogra Regiment. He was given the task of finding the exact lay out of certain enemy defences in the Western Sector. Unmindful of his safety, he crawled close to the defences and obtained accurate information which helped in sound planning of the assault against the enemy position. During the assault, his Company was pinned down by two medium machine guns firing from the flank. He rushed to one of them and silenced it. This action resulted in the enemy leaving the post.

In these actions, Captain Dhan Singh Adhikari displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

16. Captain UDAY PARASHURAM SATHE (IC-17386), Artillery.

(Effective date of the award—6th December 1971)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Captain Uday Parashuram Sathe was serving as an Observation Officer with a Battalian of the Kumaon Regiment which was given the task of capturing certain enemy held features in the Eastern Sector. In spite of heavy enemy fire, he moved about in the open directing the fire on own guns. As the Battalion neared the objective and own fire was lifted, he joined the attack with his party and neutralised a number of posts.

In this action Captain Uday Parashuram Sathe displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

17. Captain JAGDISH CHANDER GOSAIN (IC-18321), Artillery. *(Posthumous)*

(Effective date of the award—13th December 1971)

On the night of the 13th/14th December, 1971, Captain Jagdish Chander Gosain was detailed as forward Observation Officer with a leading company in the attack on an enemy defended area in the Western Sector. The attack was held up due to effective fire from a few cement concrete bunkers. Captain Jagdish Chander Gosain, therefore, arranged to fire his gun in direct firing role on to the bunkers by exposing himself in the lethal zone of own shells as well as that of the enemy. Immediately after air strike, the officer assumed command of the Company and assaulted the bunkers in broad day light along with forty Other Ranks.

In this action, Captain Jagdish Chander Gosain displayed gallantry, leadership, determination and made the supreme sacrifice for the call of duty in keeping with the best traditions of the Indian Army.

18. Captain JATINDER NATH SUD (IC-21836), Gorkha Rifles. *(Posthumous)*

(Effective date of the award—8th December 1971)

Captain Jatinder Nath Sud was in Command of a Platoon which was rushed forward to assist in repulsing the enemy counter-attack on a Company in Pirgani in the Eastern Sector on the night of 7th/8th December, 1971. After positioning his guns, he rushed upto the two Medium Machine gun detachments which were under heavy enemy mortars and small arms fire and took personal charge of the detachments and engaged the enemy. At 0500 hours on 8th December 1971, by relentless pressure, the enemy led by their Commanding Officer, crept upto 20 yards and made a desperate assault on the two Medium Machine Gun posts and managed to destroy one of them. Captain Sud sensing the danger to his Medium Machine Gun, rushed out of his trench and assaulted the enemy. In the process he was hit by a burst of automatic fire. By his act of valour, he saved his Medium Machine Guns and helped his comrades to break the enemy attach.

In this action, Captain Jatinder Nath Sud displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

19. Lieutenant MOHAN SINGH (IC-19912), Assam Regiment.

(Effective date of the award—6th December, 1971)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Lieutenant Mohan Singh was serving with a Battalion of the Assam Regiment. His platoon was assigned the task of capturing an enemy Medium Machine Gun Post in the Amritsar Sector. The position was held by a section and enemy had laid mines in the general area. In spite of intense enemy fire. Lieutenant Mohan Singh led his men to successful completion of the task in utter disregard to his safety. He was personally responsible for silencing the Medium Machine Gun Post by lobbing a grenade into the post.

In this action, Lieutenant Mohan Singh displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

20. 2nd Lieutenant TAMAL SATYANARAYAN ROY (IC-24594). Engineers.
(Effective date of the award—6th December, 1971)

2nd Lieutent Tamal Satyanarayan Roy was commanding a platoon which was given the task of providing a vehicle lane for the build up against a heavily guarded position in the Eastern Sector. The enemy Brought down heavy artillery fire on his platoon while the breaching was being done. Leading his men with courage and with no regard to his safety, he continued with the work. While the platoon was half way through, the enemy brought down effective small arms and medium machine gun fire on them. He charged through the mine-field on the enemy post, neutralised it and captured one recoilless gun mounted on a jeep and one medium machine gun. He again continued to breach the lane and completed the task in time.

In this action, 2nd Lieutenant Tamal Satyanarayan Roy displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

21. 2nd Lieutenant CHANDER PAL (SS-22936), Armoured Corps.
(Effective date of the award—4th December, 1971)

2nd Lieutenant Chander Pal was the troop leader which was given the task of assaulting a well fortified position in the Eastern Sector. With complete disregard to his personal safety he put his tank right in the front and charged through the minefield. When 20 yards short of the bunker complex, his tank was hit by a recoilless gun as a result of which he was seriously injured. Undeterred he got down from the tank and rushed on to the bunker, on the top of which he collapsed.

In this action, 2nd Lieutenant Chander Pal displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

22. 2nd Lieutenant KUMUD KUMAR (IC-25308), Rajput Regiment.

2nd Lieutenant Kumud Kumar who was Commanding a platoon of a Battalion of the Rajput Regiment was ordered to clear a road block in the Eastern Sector. During the advance, the enemy brought down heavy fire from medium machine gun and light machine guns. 2nd Lieutenant Kumud Kumar crawled unto the medium machine gun bunker and silenced it by lobbing a grenade on it. This action enabled the platoon to capture the position and clear the road block.

In this action, 2nd Lieutenant Kumud Kumar displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

23. 2nd Lieutenant MANOHAR SINGH CHAUHAN (SS-24349) 4th Gorkha Rifles.
(Effective date of the award—3rd December, 1971)

2nd Lieutenant Manohar Singh Chauhan was commanding a platoon of a Battalion of the Gorkha Rifles which was occupying a defended locality in the Poonch Sector. His platoon was guarding an important approach to the locality. On the night of the 3rd/4th December, 1971, the enemy attacked in great numerical superiority. The main brunt of the attack fell on his platoon. 2nd Lieutenant Chauhan moved from trench to trench, inspiring his men under a hail of enemy artillery, rocket and medium machine gun fire. The enemy made reneated efforts to overrun his position but, under his inspiring leadership, the platoon successfully repulsed the attacks.

In this action 2nd Lieutenant Manohar Singh Chauhan displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

24. 2nd Lieutenant DEVPAL SINGH B. DEVAL (SS-23766), 5th Gorkha Rifles. *(Posthumous)*

2nd Lieutenant Devpal Singh B. Deval was commanding the leading platoon of a Battalion of the 5th Gorkha Rifles during an assault on an enemy post in the Sylhet Sector. The post was wellfortified. The enemy brought down heavy and accurate artillery and medium machine gun fire on the platoon. Undeterred he pressed home the assault inspiring his men and silencing bunker by bunker till finally neutralising the enemy. In a subsequent action, he was wounded but continued to fight till he succumbed to his wounds.

In these actions, 2nd Lieutenant Devpal Singh B. Deval displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

25. JC 30557 Subedar PAHLAD SINGH, Jat Regiment.
(Effective date of the award—5th December, 1971)

On the 13th December, 1971, Subedar Krishnan Nair was commanding a platoon of a company which was ordered to capture an enemy locality in the Eastern Sector. The locality consisted of a net work of bunkers, the capture of which involved going deep into the enemy flank. The advance was to be carried out in open ground devoid of any cover during day light. Subedar Pahlad Singh led the assault. On nearing the bunkers, he was wounded with a burst of medium machine guns, but he pressed on the attack till complete success was achieved in hand to hand fight.

In this action, Subedar Pahlad Singh displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

26. JC 35544 Subedar KRISHNAN NAIR, Madras Regiment *(Posthumous)*
(Effective date of the award—13th December, 1971)

On the 13th December, 1971, Subedar Krishnan Nair was commanding a platoon of a battalion which was given the task of capturing an enemy position in the Khulna Sector. The enemy brought down heavy and effective artillery and automatic weapons fire on his platoon which was in the lead. Unmindful of his safety, he kept inspiring his men to press on with the attack. While still away from the objective, he was injured by a bullet in the left arm, but this did not slow him down. When about 150 yards short of the objective he was again wounded by a shell splinter as a result of which he died.

In this action, Subedar Krishnan Nair displayed gallantry, leadership, and devotion to duty of a high order.

27. JC 41949 Naib Subedar UMED SINGH, Jat Regiment. *(Posthumous)*

Naib Subedar Umed Singh was a Platoon Commander in the force which was given the task of attacking an important enemy position. In spite of many difficulties, he established a foothold on the objective. The enemy launched a massive counterattack but under the inspiring leadership of Naib Subedar Umed Singh, heavy casualties were inflicted on the enemy. In the process, Naib Subedar Umed Singh sustained serious injuries, as a result of which he died.

In this action, Naib Subedar Umed Singh displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

28. 2547394 Naib Subedar VARGHESE, Madras Regiment. *(Posthumous)*
(Effective date of the award—9th December, 1971)

Naib Subedar Varghese was commanding a Platoon in the force which was ordered to advance along Jessore-Khulna road in the Eastern Sector. The advance was hindered by heavy fire of medium machine gun. Unmindful of his safety Naib Subedar Varghese engaged the enemy, crawled forward in the open field and destroyed the Medium Machine Gun Post by rifle and grenade fire. In a later action while in the process of lobbing a grenade on another machine gun post, he was seriously injured, as a result of which he died.

In these actions Naib Subedar Varghese displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

29. 3943836 Havildar RUMESH KUMAR, Dogra Regiment. *(Posthumous)*
(Effective date of the award—5th December, 1971)

Havildar Rumesh Kumar was commanding a Platoon which was ordered to reinforce a position in the Comilla Sector. While the platoon was passing through an open paddy field, it was attacked by an enemy company which was hiding in a jungle patch. Under the inspiring leadership of Havildar Rumesh Kumar, the platoon fought the enemy resolutely. The enemy withdrew after bitter hand to hand fighting, leaving behind dead and wounded. Whilst rallying his men, Havildar Rumesh Kumar was fatally wounded by an enemy machine gun burst.

In this action, Havildar Rumesh Kumar displayed gallantry leadership and devotion to duty of a high order.

30. 3948143 Havildar KUSHAL SINGH, Dogra Regiment. *(Posthumous)*

Havildar Kushal Singh was commander of a Recoilless Rifle Detachment with the leading company in an assault on a well fortified enemy position in the Eastern Sector. The

enemy brought down heavy and effective fire of medium machine gun. Havildar Kushal Singh rushed forward with his recoilless gun and destroyed one of the medium machine guns of the enemy. He destroyed four other machine gun posts single-handed. While laying the gun for the sixth time, he was fatally wounded by a medium machine gun burst.

In this operation, Havildar Kushal Singh displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

31. 4142319 Havildar SHANKAR DATT JOSHI,
Kumaon Regiment. (*Posthumous*)

(*Effecting date of the award—16th December,* 1971)

Havildar Shankar Datt Joshi was commanding a Platoon which was ordered to clear an enemy position in the Eastern Sector. Under his able leadership the platoon established a foot-hold. The enemy brought heavy fire on the platoon in a bid to dislodge them. Havildar Shankar Datt Joshi rushed to the enemy medium machine gun bunker and damaged it. This bold action drew the fire of other bunkers in the vicinity. He kept rushing to the bunkers till he collapsed riddled with bullets and died on the battle field.

In this action, Havildar Shankar Datt Joshi displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

32. 3950984 Lance Havildar SUKHDEV SINGH,
Dogra Regiment.

(*Effective date of the award—16th December,* 1971)

Lance Havildar Sukhdev Singh was the Commander of one of the leading Sections of a Battalion of the Dogra Regiment which was ordered to attack a well fortified enemy position in the Eastern Sector. During the assault, an enemy heavy machine gun opened up from a flank. Unmindful of his safety, Lance Havildar Sukhdev Singh crawled upto the heavy machine gun and silenced it with a grenade. Thereafter, he charged the two neighbouring enemy trenches and bayoneted the enemy personnel. This action contributed in no small measure to the capture of the objective by the Battalion.

In this action, Lance Havildar Sukhdev Singh displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

33. 4146822 Naik SHER SINGH,
Kumaon Regiment.

Naik Sher Singh was Commander of a Section which was ordered to silence an enemy post in an area in the Eastern Sector. The section came under heavy and accurate light machine gun fire from an enemy bunker. Unmindful of his safety, Naik Sher Singh charged on to the bunker and silenced it with a grenade. Inspired by his example, the section captured the enemy post.

In this action, Naik Sher Singh displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

34. 13659162 Naik DURYODHAN SINGH,
Brigade of Guards. (*Posthumous*)

(*Effective date of the award—14th December,* 1971)

Naik Duryodhan Singh was the leading Section Commander during the capture of Sylhet railway station. Immediately after crossing the start line, his platoon was pinned down by the intense and accurate fire of a heavy machine gun of the enemy. Unmindful of his safety, Naik Duryodhan Singh crawled upto the heavy machine gun post. He lobbed a grenade and charged the position with his sten, firing from the hip. He silenced the enemy post after killing the three Other Ranks manning the post. At this moment, he was hit by a burst from an enemy light machine gun as a result of which he died.

In this action, Naik Duryodhan Singh displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

35. 3349282 Naik MOHINDER SINGH,
Sikh Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of the award—16th December,* 1971)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Naik Mohinder Singh was the Medium Machine Gun Section Commander with a Company of a Battalion of the Sikh Regiment. The Company had been assigned the task of establishing a road block behind the enemy in Eastern Sector. When the Company reached its objective, it had to put in a determined attack to dislodge the enemy. In the process, Naik Mohinder Singh and two others of his section were wounded. As the Company was firming in, an enemy platoon supported by a tank put in a counter-attack. In spite of his severe wounds, Naik Mohinder Singh continued to man the machine gun and brought down such accurate and intense fire that the enemy fled from the position after leaving the tank. At this stage, Naik Mohinder Singh succumbed to his injuries.

In this action Naik Mohinder Singh displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

36. 2748767 Naik MARUTI NAKIL,
Maratha Light Infantry. (*Posthumous*)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Naik Maruti Nakil was the Medium Machine Gun Section Commander with a Company of a Battalion of the Maratha Light Infantry. The Company was acting as the vanguard for the Battalion's advance in an area in the Eastern Sector. The enemy brought down accurate and intensive artillery fire. Simultaneously, three medium machine guns opened from a flank and started inflicting heavy casualties. Realising the seriousness of the situation, Naik Maruti Nakil, in complete disregard for his safety, brought his section into immediate action and silenced one of the enemy medium machine guns. The other two were knocked out by our tanks. In the process Naik Maruti Nakil was hit by a burst of medium machine gun fire as a result of which he died.

In this action Naik Maruti Nakil displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

37. 3750559 Naik ANKUSH CHAVAN,
Maratha Light Infantry.

(*Effective date of the award—13th December,* 1971)

Naik Ankush Chavan was in command of the Left Forward Section of Number five platoon of a Company during its attack on an enemy position in the Eastern Sector. During the assault both his Light Machine Gun numbers were seriously wounded but Naik Ankush Chavan picked up the automatic himself and continued to fire from the hip till the objective was captured. During the next day, the Company position was subjected to a series of counter-attacks by the enemy but the accurate and intense fire from his Light Machine Gun broke up all enemy efforts and inflicted heavy casualties on them.

During these actions, Naik Ankush Chavan displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

38. 2849833 Lance Naik ABHEY RAM
Rajputana Rifles. (*Posthumous*)

(*Effective date of the award—6th December,* 1971)

Lance Naik Abhey Ram was serving with a Battalion of the Rajputana Rifles, when it encountered strong position from the enemy in an area in the Eastern Sector. An attack was launched and during the hand to hand fighting, Lance Naik Abhey Ram killed six enemy soldiers. In the process, he was wounded and later succumbed to his injuries. His gallant act was a source of inspiration to the Company and the enemy was forced to flee from the well fortified position.

In this action Lance Naik Abhey Ram displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

39. 5835313 Lance Naik OM BAHADUR CHHETRI,
9th Gorkha Rifles. (*Posthumous*)

(*Effective date of the award—15th December,* 1971)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Lance Naik Om Bahadur Chhetri was a Section Commander in a Company of a Battalion of the 9th Gorkha Rifles. During the attack on an enemy position in the Eastern Sector, the company was subjected to intense and accurate fire of enemy artillery, mortars and automatic weapons. Lance Naik Chhetri while leading the assault was wounded. Though bleeding profusely, he charged a machine gun post and silenced it single-handed. Immediately afterwards, he fell down and succumbed to his injuries. Inspired by his example, the section was able to capture its objective.

In this action, Lance Naik Om Bahadur Chhetri displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

40. 5437958 Lance Naik BALBAHADUR GURUNG, 5th Gorkha Rifles.

(*Effective date of the award—13th December,* 1971)

During the operations against Pakistan in December, 1971. Lance Naik Balbahadur Gurung and his section was given the task of raiding an enemy medium machine gun bunker in the Sylhet Sector. Lance Naik Gurung and another Jawan crawled within fifteen yards of the post and lobbed grenades. As the opening in front of the bunker was too small the grenades exploded outside. The enemy was alterted and all weapons in the locality opened up. With great presence of mind and determination Lance Naik Gurung charged the enemy bunker with a kukri and killed two of the enemy soldiers, the rest fled leaving behind two medium machine guns and a large quantity of ammunition.

In this action, Lance Naik Balbahadur Gurung displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

41. 2451226 Sepoy BANWARI LAL, Punjab Regiment. (*Posthumous*)

Sepoy Banwari Lal was serving with a Company of a Battalion of the Punjab Regiment which was assigned the task of capturing an enemy held area in the Eastern Sector. As the Company was forming up, intense and accurate enemy artillery fire was brought down on it. With great presence of mind, Sepoy Banwari Lal directed his Light Machine Gun fire on a large tree where an enemy observation post officer was hiding and killed him. Although he was seriously wounded in the fighting, he continued to support the company assault by covering the flank of the assault by his Light Machine Gun fire till he succumbed to his injuries.

In this action, Lance Naik Banwari Lal displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

42. 2567525 Sepoy KOLLI JOHN KRISHTHAPHER, Madras Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of the award—13th December,* 1971)

Sepoy Kolli John Krishthapher was serving with a Battalion of the Madras Regiment, during its attack on an enemy position in the Eastern Sector. After the assault had commenced, Sepoy Krishthapher's Platoon was held up due to heavy and accurate fire from a medium machine gun of the enemy which was entrenched behind wall. Sepoy Krishthapher in complete disregard for his safety, volunteered to silence the machine gun. He dashed through the only opening in the wall, threw a grenade into the enemy trench and then jumped into the trench. While in the trench, he made the supreme sacrifice.

In this action Sepoy Kolli John Krishthapher displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

43. 13661050 Guardsman BRIJ LAL, Brigade of Guards. (*Posthumous*)

(*Effective date of the award—14th December,* 1971)

Guardsman Brij Lal was the wireless operator with a Platoon of a Battalion of the Brigade of Guards, which was assigned the task of clearing an enemy patrol entrenched in its patrol base in the Sialkot Sector. As the platoon was closing in, a medium machine gun opened up killing three Other Ranks. Guardsman Brij Lal, in complete disregard for his safety, charged the machine gun post firing his sten from the hip and killed one of the enemy soldiers manning the machine gun. He was, however hit by a burst of machine gun fire as a result of which he died.

In this action Guardsman Brij Lal displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

44. 5238218 Rifleman PREM BAHADUR THAPA, 3rd Gorkha Rifles. (*Posthumous*)

(*Effective date of the award—11th December,* 1971)

Rifleman Prem Bahadur Thapa was serving with a Company of a Battalion of the 3rd Gorkha Rifles, during its attack on an enemy post in the Western Sector. After crossing the startline, a medium machine gun post suddenly opened up from a flank and held up the attack. In complete disregard for his safety, Rifleman Thapa volunteered to silence the weapon. While crawling towards the machine gun post, he was hit by a burst of fire and started bleeding profusely. Ungmindful of his wound he continued to crawl and threw a grenade in the trench. He silenced the machine gun but succumbed to his injuries.

In this action Rifleman Prem Bahadur Thapa displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

45. Shri LALTHAWMA LUSHAI, Assistant Commandant, Border Security Force.

(*Effective date of the award—4th December,* 1971)

On the 4th December, 1971, Assistant Commandant Lalthawma Lushai led a company attack on an enemy position in the Eastern Sector. He carried out a river crossing and long encircling movement during the night in order to assault the enemy position from the rear. He took the enemy completely by surprise and ranover the position inflicting heavy casualties. On the 10th December, 1971, Assistant Commandant Lalthawma Lushai again carried out a wide outflanking move around another enemy position and established a road block. He carried out this move expeditiously in spite of enemy resistance at four different points and in the process captured eight enemy personnel. Again, on the 14th December, 1971, he carried out another outflanking move and thus helped in the capture of the objective.

In all these actions, Assistant Commandant Lalthawma Lushai displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

No. 125-Pres./72.—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Paistan to :—

Commander RISHI RAJ SOOD (X) NM INDIAN NAVY.

During the hostilities with Pakistan in December, 1971, Commander Rishi Raj Sood was the Commanding Officer of one of the Indian Naval ships which participated in operations in the ARABIAN SEA. His Ship formed part of an anti-submarine attack force, which was involved in hunting and killing enemy submarines. When Indian Naval Ship KHUKRI received multiple torpedo hits from an enemy submarine, Commander Sood rushed his ship into a counter-attack on the enemy submarine. The attack was conducted so fiercely and relentlessly that the enemy submarine could not carry out any further attack and had to make a retreat.

In this action, Commander Rishi Raj Sood displayed gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

No. 126-Pres./72.—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

Flying Officer SATISH CHANDRA SHARMA (12244) Flying (Navigator)

During the operations against Pakistan in December, 1971 Flying Officer Satish Chandra Sharma was attached to a Brigade in the Eastern Sector for duties as a Forward Air Controller in the Air Contact Team of the Brigade. On the 7th December, 1971, Flying Officer Sharma was detailed to accompany a Company which was airlifted by helicopters to a site behind the enemy occupied area at Sylhet. He landed at the helipad at 1700 hours with a small party and signal sets, under heavy enemy fire. He immediately took control of the situation and brought his men safely to a vantage point from where he directed the incoming helicopters sorties to strike enemy positions at the branch on river Surma and enemy Headquarters at Circuit House. This strike was so effective that the enemy did not fire for quite some time. The enemy resumed its fire pressure at the subsequent landings on the morning of 8th December, 1971. Flying Officer Sharma again went out to a vantage point under heavy enemy small arms fire and shelling and successfully directed our bombers on the enemy positions and targets. These strikes were so accurate that the enemy firing ceased immediately. On the night of 8th/9th December 1971, the enemy occupied positions around two of our forward block companies and engaged them with heavy MMG and mortar fire. Flying Officer Sharma again went out to a vantage point and effectively directed our air strike. Undeterred by the enemy fire all around him, he led his escort party towards the forward company location. Enroute he encountered a small enemy patrol, who fired at his party from a nearby grove Though unfamiliar with the infantry tactics. Flying Officer Sharma ordered his small party to attack the enemy, and personally led the charge on to the enemy patrol. This spontaneous and swift action resulted in death of two enemy personnel. Flying Officer Sharma and his party moved forward with confidence and reached a suitable vantage point close to the

forward block company. From that position, he directed air attacks on the enemy occupied area. The air strikes were so accurate and effective that they disorganised enemy's preparation for a possible attack on the forward block company.

Throughout, Flying Officer Satish Chandra Sharma displayed gallantry, leadership and professional skill of a high order.

No. 127-*Pres.*/72.—The President is pleased to approve the award of the SHAURYA CHAKRA for acts of gallantry to :—

1. 1515434 Naik ADARSH KUMAR ARORA, ENGINEERS.

A platoon of a Field Company was assigned the task of recovering enemy-laid mines in an area in the Western Sector. After completing the tasks, the mines were loaded into a 3 tonner vehicle. The vehicle was moving back along the central line of the cleared minefield when, while negotiating a turn, it went over an undetected anti-tank mine and its fuel tank caught fire. An Other Rank who was sitting in the vehicle fell out. Naik Adarsh Kumar Arora, who was following on foot about 100 yards behind the vehicle rushed forward and tried to put out the fire. By this time, however, the fire had gone beyond control and there was imminent danger of the vehicle containing nearly 6,000 lbs of explosive material being blown up. In utter disregard of the danger to his own life, Naik Adarsh Kumar Arora lifted the unconscious Other Rank and managed to move to a safe position in a depression about 50 yards away. Soon after, the vehicle with all the mines blew up into pieces.

In this action Naik Adarsh Kumar Arora displayed gallantry of a high order.

2. 13658468 Guardsman TEJ SINGH, Brigade of the GUARDS

Guardsman Tej Singh, while on sentry duty in a Platoon located at Raipur in the Western Sector, heard two blasts and saw that two officers, who were patrolling the area to record the mine-field lane and gap on the map, had walked over anti-personnel mines and had been severely injured inside the mine-field. Guardsman Tej Singh immediately rushed from his trench and, with utter disregard to his safety, and in spite of warnings from the injured officers went inside the mine-field and reached the spot where the two officers were lying wounded. With great presence of mind, he first held one officer firmly on the ground to prevent him from rolling over another mine and then carefully lifted him and brought him safely out of the mine-field. The other wounded officer was similarly rescued by another Guardsman.

In this action Guardsman Tej Singh displayed gallantry of a high order.

3. 3355514 Guardsman SURJAN SINGH Brigade of the GUARDS.

Guardsman Surjan Singh, while on sentry duty in a platoon located at Raipur in the Western Sector, heard two blasts and saw that two officers, who were patrolling the area to record the mine-field lane and gap on map, had walked over anti-personnel mines and had been severely injured inside the mine-field. Guardsman Surjan Singh immediately rushed from his trench and with utter disregard to his safety, and in spite of warnings from the injured officers, went inside the mine-field and reached the spot where the two officers were lying wounded. With great presence of mind, he first held one officer firmly on the ground to prevent him from rolling over another mine and then carefully lifted him and brought him safely out of the mine-field. The other wounded officer was similarly rescued by another Guardsman.

In this action Guardsman Surjan Singh displayed gallantry of a high order.

No. 128-*Pres.*/72.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Madhya Pradesh Police :—

Name and rank of the officer

Shri Beta Lal Sharma (*Deceased*)
Sub-Inspector of Police,
Seondha Police Station,
District Datia,
Madhya Pradesh.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

The gang of dacoit Bahadura Gujar had gained notoriety for murder, dacoity and kidnapping in the districts of Datia and Gwalior in Madhya Pradesh and Jhansi and Jalaun in Uttar Pradesh Shri Beta Lal Sharma was directed to organise operations against the gang. On 5th April, 1972, information was received by Shri Beta Lal Sharma that the gang of dacoit Bahadura Gujar was present in a field near village Maliyapura. He collected the small force available at the Police Station and immediately left for the hide-out of the dacoit to engage the gang. The police was divided into two groups, one of which was led by Shri Beta Lal Sharma himself and the other by the Circle Inspector. Shri Beta Lal Sharma hired two bullock carts and proceeded in them in plain clothes to the place where the dacoits were suspected to be hiding. As they were nearing the hide-out of the dacoits, the dacoits opened fire on them. Shri Beta Lal Sharma and his men immediately jumped from the bullock-carts, took positions and returned the fire. The dacoits tried to shoot their way out through a gap which was not completely blocked. Shri Beta Lal Sharma saw through the move of the dacoits and proceeded, crawling and at time running, to block the gap. He blocked the retreat of the gang without caring for the bullets fired by the dacoits. In the exchange of fire he shot dead one dacoit. He was himself hit by a bullet on the head and died on the spot. In the encounter, one more dacoit was killed by the police party and a kidnapped person was rescued.

In this encounter Shri Beta Lal Sharma displayed conspicuous gallantry and laid his life in the discharge of his duty.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 5th April, 1972.

No. 129-*Pres.*/72.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of the Madhya Pradesh Police :—

Names and ranks of the officers

Shri Sadaram Shambhujee Warwade,
Deputy Superintendent of Police,
Datia,
Madhya Pradesh.

Shri Raghbendra Singh Atwal,
Station Officer, Kotwali,
Datia,
Madhya Pradesh.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

The gang of dacoit Bahadura Gujar had attained notoriety Gwalior range Madhya Pradesh for indiscriminate murders and kidnappings. They had been evading arrest by the Police for some time. On the evening of 16th February, 1972, information was received by Shri Raghbendra Singh Atwal that the gang of dacoit Bahadura Gujar was present in village Kalipur, Police Station Kalipur, Datia. On receipt of the information a raid was organised by Shri Sadaram Shambhujee Warwade. On reaching the hide-out of the gang, the police force was divided into three groups and the hide-out was cordoned off. The dacoits came to know about the presence of the police and opened heavy fire on them. A bullet narrowly missed Shri Warwade, but Shri Warwade remained undaunted, climbed up on the wall and asked the dacoits to surrender. Shri Atwal also climbed on the roof of the adjoining house and from there jumped on to the roof of the house where the dacoits were hiding, in disregard of the heavy fire by the dacoits. The dacoits made an attempt to escape under the cover of heavy fire but their attempt was foiled by these two officers. The dacoits then took shelter in a room and bolted themselves in. A close quarter battle ensued with Shri Warwade and Shri Atwal on one side and the dacoits on the other. Shri Warwade and Shri Atwal shot dead two dacoits and captured their arms and ammunitions.

In this encounter Shri Sadaram Shambhujee Warwade and Shri Raghbendra Singh Atwal exhibited conspicuous gallantry and exemplary courage.

2. These awards are made for gallantry under rule 4(i) of rules governing the award of the Police Medal and consequently in the case of Shri Raghbendra Singh Atwal, the award carries with it in the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 16th February, 1972.

New Delhi, the 6th December 1972

No. 130-*Pres.*/72.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Calcutta Police :—

Name and rank of the officer

Shri Kanti Bhushan Das Gupta,
Sergeant No. 190,
Calcutta Police,
West Bengal.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 28th October, 1970, information was received by Shri Kanti Bhushan Das Gupta that an extremist of Burtolla Police Station area was present at a musical function that was held at a place on Masjidbari Street, Calcutta. On receipt of the information Shri Das Gupta sealed all the escape routes and entered the area taking with him only two constables. At about 9.45 P.M. Shri Das Gupta arrested the extremist from the midst of the crowd. While Shri Das Gupta was coming out, the extremist tried to whip out a dagger but his attempts were foiled by one of the constables who were accompanying Shri Das Gupta. At this the extremist raised an alarm as a result of which about twenty armed men surrounded the police party and attempted to free the extremist from the police custody. While Shri Das Gupta was tackling th mob, the extremist snatched a revolver from one of the constables and fired a shot which hit the constable on the left leg. Then he turned towards Shri Das Gupta with the loaded revolver. Shri Das Gupta pulled out his own revolver and fired the extremist as a result of which the extremist fell down. With equal promptitude he secured the loaded revolver from the hand of the injured extremist. In the mean time more police force arrived and chased away the miscreants; the injured notorious extremist was pronounced dead when taken to hospital.

In this action Shri Kanti Bhushan Das Gupta displayed gallantry and courage of a high order.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 28th October, 1970.

No. 131-*Pres.*/72.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Border Security Force :—

Name and rank of the officer

Shri Singdal Limboo, No. 59866016,
Naik,
86th Battalion,
Border Security Force.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

Shri Singdal Limboo played a gallant role in the operations in Bangladesh between 12th and 15th December, 1971. On 12th and 13th December, 1971, Shri Limboo accompanied his Company Commander on reconnaissance and obtained useful information. Further in the operations in Nagardengri, Atgram Manigani and Fatehpur, he guided his Company from the assembly area to the forming up place in disregard of his personal safety. Again on 13th December, 1971 he cleared enemy bunkers in Manigani and Fatehpur area and captured one Pakistani sepoy and one Chinese rifle with a lot of ammunition. In the attack on Magam Tilla on 14th December, 1971, he provided covering fire to his Company and enabled them to take favourable position for launching and assault on the enemy position.

In this action Shri Singdal Limboo displayed conspicuous gallantry and exemplary devotion to duty.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 15th December, 1971.

No. 132-*Pres.*/72.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Calcutta Police :—

Name and rank of the officer

Shri Hirak Lal Das Gupta,
Sergeant,
Calcutta Police,
Wireless Department,
West Bengal.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On 1st March, 1971 at about 4.50 A.M., while Shri Hirak Lal Das Gupta was on wireless patrol duty in Shyampukur and Jorabaga areas of Calcutta, he received information that a serious disturbance had taken place near the junction of Sovabazar Street and Rabindra Sarani. When he reached the spot he found two warring groups armed with bombs, pipe guns, etc. He was also attacked with bombs when he went near them. After he dispersed the rival groups, he received information that a trouble had also taken place further North at Shyampukur. The place of disturbance with inside a narrow lane. Accordingly he left his wireless van and proceeded to the spot on foot. On reaching the place of disturbance, he found an injured police officer lying on the ground. As he stepped close to the police officer, he was attacked with bombs from house tops. Shri Das Gupta, however, crawled along the narrow lane in disregard of his personal safety. He was hit by a bomb on the left leg but he continued to proceed in disregard of his serious injury and brought the injured police officer to his wireless van.

In this encounter Shri Hirak Lal Das Gupta displayed exemplary courage and devotion to duty.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissile under rule 5 with effect from the 1st March, 1971.

P. N. KRISHNA MANI, Joint Secy.

RAJYA SABHA SECRETARIAT

New Delhi, the 1st December 1972

*No. RS.*18/72-*T.*—Shrimati Nandini Satpathy, an elected Member of the Rajya Sabha representing the State of Orissa, has resigned her seat in the Rajya Sabha with effect from the 29th November, 1972.

B. N. BANERJEE, Secy.

MINISTRY OF LAW AND JUSTICE

(Legislative Department)

New Delhi, the 25th November 1972

RESOLUTION

No. F. 4(1)/70-*OL.*—In further modification of the Resolution No. F. 4(1)/70-OL dated the 10th January, 1972, reconstituting the Advisory Committee on Hindi for the Ministry of Law and Justice, the Government of India have decided that Shri M. Srinivasa Reddy M.P. Rajya Sabha, should also be a Member of the said Committee in addition to the Members whose names have already been notified.

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to all State Governments and Union Territory Administrations, Prime Minister's Secretariat, Cabinet Secretariat, Department of Parliamentary Affairs, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Planning Commission, President's Secretariat, Comptroller and Auditor General, Accountant General, Central Revenues and all Ministries and Departments of the Government of India.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

N. SRINIVASAN, Dy. Secy.

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Delhi-110001, *the* 30*th November* 1972

No. 26/12/72-*ANL*.—In pursuance of clause (d) of paragraph 2 of the notification of the Government of India in the Ministry of Home Affairs No. 26/12/72-ANL dated the 4th October, 1972 the following members of the Chief Commissioner's Advisory Committee have been elected to be members of the Advisory Committee for the Union Territory of Andaman and Nicobar Islands to be associated with the Minister of Home Affairs, for the period upto the 31st March, 1973 :—

1. Shri A P. Abdulla Kutty
2. Shri Adwin Moses
3. Shri Madhusudan Mondal
4. Shri Mahananda Biswas
5. Shri Nehchal Singh Chawla
6. Shri Ram Naresh Singh
7. Captain Samson Lome

JAYAKER JOHNSON, Dy. Secy.

MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY PLANNING

(Department of Health)

New Delhi, the 1*st December* 1972

No. O. 13016/9/71-*PHE*(*L*).—The Government of India had constituted a Committee on Urban Wastes, vide Resolution No. O. 13016/9/71-PHE dated the 6th May, 1972 to study the problem of the disposal of urban waste, and night-soil and also be find out the utilisation of such wastes for agricultural purposes for a period of six months *i.e.* upto 5th November, 1972. It has been decided to extend the term of the Committee for a period of another six months, with effect from 6th November, 1972.

ORDER

ORDERED that this Notification be communicated to :—

1. Lok Sabha Secretariat.
2. Raiya Sabha Secretariat.
3. Prime Minister's Secretariat.
4. Cabinet Secretariat.
5. Planning Commission.
6. Private and Military Secretaries to the President.
7. Comptroller and Auditor General of India.
8. All Ministries and Departments of Government of India.
9. All the State Govts./Union Territories.
10. Accountant General, Central Revenues, New Delhi.
11. Department of Atomic Affairs.
12. Indian Council of Medical Research, New Delhi.
13. Council of Scientific and Industrial Research, New Delhi.
14. Central Public Health Engineering Research Institute, Nagpur.
15. All India Institute of Hygiene and Public Health, Calcutta.
16. Central Public Health Engineering Organisation and
17. Director General of Health Services, New Delhi.

ORDERED that the Notification be published in the Gazette of India.

A. B. MALIK, Jt. Secy.

MINISTRY OF EDUCATION & SOCIAL WELFARE

New Delhi, the 15*th November* 1972

No. F. 1-2/72-*YS*-1(2).—The following members of the All India Council of Sports are hereby nominated on the Executive Committee of the Council constituted vide para 2 of the Ministry's Notification No. F. 1-2/72-YS-1(2) dated the 2nd May, 1972 for a period of one year w.e.f. 1-5-1972.

1. Shri Zulfiquar Ali Khan, Member of Parliament.
2. Shri Vayalar Ravi, M.P.
3. Shri K. P. Singh Deo, M.P.

KANTI CHAUDHURI, Jt. Secy.

(Department of Culture)

New Delhi, the 27*th November* 1972

No. 22/2/72-*CAI*(2).—In pursuance of para 3(1) of the Government of India, Department of Culture Resolution No. F. 22-7/69-CAI(2), dated the 10th March, 1972, regarding the reconstitution of Indian Historical Records Commission, the following persons are appointed as Members of the said Commission for a period of five years with effect from the 26th September, 1972 :—

Members

(ii) *Under para* 3.*I.A*(1) *of the Constitution* :

Secretary to the Government of India, Ministry of Education, Social Welfare and Department of Culture.

(ii) *Under para* 3.*I.A*.(2) *of the Constitution* :

1. Prof. M Mujeeb, Vice-Chancellor, Jamia Millia Islamia, New Delhi 25.
2. Prof. N. R. Ray, 57, Lodi Estate, New Delhi-3.
3. Prof. S. Gopal, Professor of History, Jawaharlal Nehru University, New Mehrauli Road, New Delhi-57.
4. Prof. P. C. Gupta, Vice-Chancellor, Visva-Bharati, Santiniketan, (Distt. Birbhum) West Bengal.
5. Prof. B. P. Saksena, 35, Chatham Lines, Allahabad-2.
6. Dr. P. Basu, A2/43, Safdarjang Development Area, New Delhi-16.
7. Prof. G. M. Moraes, Director, Institute of Historical Research, Jasvilla FL-2, 9, New Marine Lines, Bombay-20 BR.
8. Prof. Bisheshwar Prasad, 34, Chatham Lines, Allahabad-2.
9. Prof. G. S. Dikshit, University Grants Commission Professor of History, Karnatak University, 1, Navodaya Colony, Dharwar-3 (Mysore).
10. Dr. Raghbir Sinh, "Raghbir Nivas", Sitamau, (Madhya Pradesh).
11. Prof. Amba Prasad, Professor of History, Delhi University, Delhi-7.
12. Dr. Partha Sarathi Gupta, Reader in History, Delhi University, Delhi-7.

(iii) *Under Clause* 3.*I.A*(3) *of the Constitution* :

1. *Andhra Pradesh*.—Dr. Miss) Sarojini Regani, Director, State Archives, Tarnaka, Hyderabad-7 (A.P.).
2. *Jammu & Kashmir*.—Shri F. M. Hassnain, Director, State Archives Department, (Old Secretariat), Srinagar.
3. *Maharashtra*.—Shri V. G. Khobrekar, Director of Archives & Archaeology, Elphinstone College Building Bombay-32 (B.R.).
4. *Punjab*.—Dr. Bakhshish Singh Nijjar, Record Officer, Archives Department, Punjab, Patiala.
5. *Tamil Nadu*.—Thiru S. Singarajan, Director of Archives, Tamil Nadu Archives, Madras-8.
6. *West Bengal*.—Shri T. K. Mukherjee, Assistant Director of Archives, State Archives Branch, 6, Bhawani Dutt Lane, Calcutta-7.
7. *Assam*.—Shri P. C. Sarma, Keeper of Records, Assam Secretariat Record Office, Shillong-1.
8. *Kerala*.—Smt. Padma Ramachandran, Education Secretary and *Ex-Officio* Director of Archives, Directorate of Archives, Trivandrum-1 (Kerala).

9. *Orissa.*—Shri M. P. Das, Superintendent, Orissa State Archives, Bhubaneswar (Orissa).

10. *Uttar Pradesh.*—Dr. K. P. Srivastava, Keeper of Archives, State Archives, Uttar Pradesh, 53, Mahatma Gandhi Marg, Allahabad-1 (U.P.).

11. *Mysore.*—Dr. S. V. Desika Char, Special Officer, Directorate of State Archives, Education and Youth Services Department, Mysore Government Secretariat, Vidhana Soudha, Bangalore (Mysore).

12. *Gujarat.*—Dr. G. D. Patel, Chief Editor, "Gujarat Gazetteers" and In-charge of Gujarat State Archives, 52, Shrimali Housing Society, Navrangpura, Ahmedabad-9 (Gujarat).

13. *Haryana.*—Shri S. K. Misra, I.A.S. Commissioner and Secretary to the Government of Haryana and In-charge of the State Archives, Haryana, Chandigarh.

(iv) *Nominees of the State Governments (having no organised Record Repository but having Regional Records Survey Committees) under para 3.I.A(4) :*

1. Dr. Hira Lal Chatterjee, Principal, Women's College, Government of Tripura, Agartala (Tripura).

2. Shri T. N. Chaturvedi, Chief Secretary, Delhi Administration, 5, Alipur Road, Delhi.

3. Shri J. N. Gupta, Secretary (GA), Arunachal Pradesh Administration, Shillong.

(v) *Nominees of the Universities under para 3.I.A(5) :*

1. Prof. S. Shettar, Head of the Department of History, Karnatak University, Dharwar-3, (Mysore).

2. Prof. D. N. Shukla, Head of the Medieval and Modern History Department, Allahabad University, Allahabad-2.

3. Prof. B. R. Grover, Head of the Department of History, Jamia Millia Islamia, Jamianagar, New Delhi-25.

4. Prof. V. N. Datta, Head of the Department of History, Kurukshetra University, Kurukshetra (Haryana).

5. Prof. P. L. Mehra, Head of the Department of History, Punjab University, Chandigarh-14.

6. Prof. R. Narasimha Rao, Head of the Department of History, University College of Arts and Commerce, Osmania University, Hyderabad-7 (A.P.).

7. Prof. S. C. Misra, Head of the Department of History of the Faculty of Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Baroda-2 (Gujarat).

8. Prof. Sita Ram Singh, Head of the University Department of History, L. S. College, Bihar University, Muzaffarpur (Bihar).

9. Prof. R. S. Gupte, Head of the Department of History and Ancient Indian Culture, Marathwada University, Aurangabad (Deccan), (Maharashtra).

10. Prof. A. C. Banerjee, Department of History, Jadavpur University, Calcutta-32.

11. Prof. K. A. Nizami, Head of the Department of History, Aligarh Muslim University, Aligarh.

12. Prof. A. R. Kulkarni, Head of the Department of History, Poona University, Poona-6.

13. Prof. D. P. Sinha, Head of the Department of History, North Bengal University, Raja Rammohanpur, Siliguri, (West Bengal).

14. Prof. A. C. Bose, Head of the Post-Graduate Department of History, Jammu University, Jammu (Jammu & Kashmir).

15. Prof. P. N. Misra, Head of the Post-Graduate Department of History, Bhagalpur University, Bhagalpur-7 (Bihar).

16. Prof. B. B. Misra, Professor of History, Department of History, Delhi University, Delhi-7.

17. Prof. T. K. Ravindran, Head of the University Department of History, Kerala University, Trivandrum (Kerala).

18. Prof. V. M. Reddy, Professor of History, Sri Venkateswara University, Tirupati (Andhra Pradesh).

19. Prof. S. L. Baruah, Head of the Department of History, Dibrugarh University, Dibrugarh (Assam).

20. Prof. Hari Shankar Srivastava, Head of the Department of History Gorakhpur University Gorakhpur (U.P.).

21. Prof. R. N. Nagar, Professor of Medieval and Modern Indian History, Lucknow University, Lucknow-7.

22. Prof. H. L. Singh, Head of the Department of History, Banaras Hindu University, Varanasi-5.

23. Prof. H. K. Barpujari, Head of the Department of History, Gauhati University, Gauhati (Assam).

24. Dr. R. K. Dharaiya, Lecturer in History, Gujarat University, Ahmedabad-9, (Gujarat).

25. Prof. Amales Tripathi, Head of the Department of History, Calcutta University, Calcutta-12.

26. Prof. H. L. Gupta, Head of the Department of History, Sagar University, Sagar (M.P.).

27. Dr. A. R. G. Tiwari, Reader and Head of the Post-Graduate Department of History, Sardar Patel University, Vallabh Vidyanagar (W. Rly), (Gujarat).

28. Dr. A. G. Pawar, Vice-Chancellor, Shivaji University, Vidyanagar, Kolhapur-4, (Maharashtra).

29. Prof. D. R. Sardesai, Head of the Department of History, Bombay University, University Campus, Kalina, C.S.T. Road (Manipada), Santacruz (East), Bombay-29.

30. Prof. B. K. Apte, Head of the Department of History, Nagpur University, Humanities Building, University Campus, Amrabati Road, Nagpur.

31. Pof. R. M. Sinha Head of the University Department of Post-Graduate Studies and Research in History, Jabalpur University, Jabalpur (M.P.).

32. Prof. B. S. Mathur, Head of the Department of History, Udaipur University, Udaipur (Rajasthan).

33. Prof. Dilip Kumar Ghose, Head of the Department of History, Burdwan University, Burdwan (West Bengal).

34. Prof. Veerathappa, Head of the Department of History, Central College (Bangalore University), Bangalore-1.

35. Prof. Fauja Singh, Head of the Department of History, Punjabi University, Patiala (Punjab).

36. Prof. G. C. Pande, Head of the Department of History and Indian Culture, Rajasthan University, Jaipur (Rajasthan).

37. Prof. J. S. Grewal, Head of the Department of History, Guru Nanak University, Amritsar (Punjab).

38. Prof. A. C. Srivastava, Professor of History, T. R. S. College, (Awadesh Pratap Singh University), Rewa (M.P.).

39. Prof. B. N. Lunia, Principal and Professor of History, Government Arts and Commerce College, Indore University, Agra-Bombay Road, Indore-1 (M.P.).

40. Prof. O. P. Bhatnagar, Head of the Department of History, University Teaching Department, Ravishankar University, Raipur (M.P.).

41. Prof. Nabin Kumar Sahu, Head of the Department of History, Sambalpur University, Sambalpur (Orissa).

42. Prof. V. R. Chatterjee, Head of the Department of History, Meerut College (Meerut University), Meerut (U.P.).

43. Prof. B. B. Lal, Head of the Department of School of Studies in Ancient Indian History, Culture and Archaeology, Jiwaji University, Gwalior (M.P.).

44. Prof. B. K. Singh, Head of the Department of History, Government Hamidia College, (Bhopal University), Bhopal, (M.P.).

45. Prof. R. P. Vyas, Head of the Department of History, Jodhpur University, Jodhpur, (Rajasthan).

46. Prof. B. G. Sharma, Head of the Department of History, Madhav College, (Vikram University), Ujjain (M.P.).

47. Prof. Mohibbul Hasan, Head of the Department of History, University of Kashmir, (University Campus), Hazratbal, Srinagar-6 (J&K).

48. Prof. S. R. Mehrotra, Head of the Department of History, Himachal Pradesh University, Simla-5.

49. Dr. R. G. Parikh, Reader in History, Post-Graduate Centre in History, Saurashtra University, Kavishri Nanalal Marg, Dharampur House, Rajkot-1. (Gujarat).

50. Prof. Sheik Ali, Head of the Department of History, Mysore University, Mansa Gangotri, Mysore-6.

51. Prof. B. P. Panthari, Head of the Department of History, Kashi Vidyapith, Varanasi-2.

52. Prof. Kamlal Parikh, Head of the Department of History, Gujarat Vidyapith, Ahmedabad-14 (Gujarat).

53. Prof. K. R. Hanumanthan, Chief Professor of History, Presidency College, Madras University, Madras-5.

54. Prof. Shyam Bihari Singh, Head of the Department of History, Magadh University, Bodh Gaya, Bihar.

55. Dr. V. A. Narain, Reader in History, Patna University, Patna-5.

56. Dr. S. Bhattacharya, Associate Professor, Centre for Historical Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Mehrauli Road, New Delhi-57.

57. Prof. D. Balasubramanyam, Head of the Department of History and Politics, Annamalai University, Annamalainagar, (Tamil Nadu).

58. Prof. S. K. Sen, Head of the Department of History, Rabindra Bharati University, 6/4, Dwarkanath Tagore Lane, Calcutta-7.

59. Prof. E. Suryanarayanamurty, Head of the Department of History and Archaeology, Andhra University College of Arts, Andhra University, Waltair (Andhra Pradesh).

(vi) *Nominees of the Learned Institutions under para 3.I.A(6)* :

1. Dr. Dwijendra Tripathi, Professor of History, Indian Institute of Management, Vastrapur, Ahmedabad-15.

2. Vidyaratna Panditaraj Shri R. G. Panchamukhi, Chief Editor and Vice-President, Karnatak Historical Research Society, Dharwar-1 (Mysore).

3. Shri B. R. Nanda, Director, Nehru Memorial Museum and Library, Teen Murti House, New Delhi-11.

4. Shri S. A. Ali, Director, Indian Institute of Islamic Studies, Panchkuin Road, New Delhi-1.

5. Dr. P. N. Chopra, Editor, Gazetteers Unit, Ministry of Education and Social Welfare, (Department of Culture), Shastri Bhawan, New Delhi-1.

6. Prof. S. A. Upadhyaya, Joint Director (Academic), Bharatiya Vidya Bhavan, Chowpatty Road, Bombay-7.

7. Dr. Gopal Krishna, Senior Research Fellow at the Centre, Centre for the Study of Developing Societies, 29, Rajpur Road, Delhi-6.

8. Dr. K. N. Pandey, Director, Historical Section Ministry of Defence, West Block VIII, Wing No. 1, R. K. Puram, New Delhi-22.

9. Prof. S. P. Sen, Director, Institute of Historical Studies, 35, Theatre Road, (Shakespeare Sarani), Calcutta-17.

10. Prof. Jagir Singh Bhullar, Head of the Department of History, (Sikh History Research Department) Khalsa College, Amritsar (Punjab).

11. Rev. Anthony D'Costa, Director, Heras Institute of Indian History and Culture, St. Xavier's College, Bombay-1 (BR).

12. Prof. S. K. Saraswati, The Asiatic Society, 1, Park Street, Calcutta-16.

13. Dr. G. T. Kulkarni, Deccan College Post-Graduate and Research Institute, Poona-6.

14. Dr. J. S. Jha, K. P. Jayaswal Research Institute, Museum Buildings, Patna-1 (Bihar).

15. Shri G. H. Khare, Bharata Itihasa Samshodhaka Mandala, 1321, Sadashiv Peth, Poona-30.

16. Shri B. K. Basu, Director, Historical Division, (Ministry of External Affairs), Patiala House, Annexe 'B', New Delhi.

17. Shri G. Nath, Director, The Indian Institute of Public Administration, Indraprastha Estate, Ring Road, New Delhi-1.

18. Dr. Durgaprasad Bhattacharya, Socio-Economic Research Institute, Pre-Census Population Studies Unit, Indian Statistical Institute, 203, Barrackpore Trunk Road, Calcutta-35.

19. Prof. Kali Chorone Kormocar, Deputy Director, Institute de Chandernagor, The Residency, P.O. Chandernagore, District Hooghly (West Bengal).

20. Shri D. R. Bhat, Curator, I. V. K. Rajwade Sanshodhan, Mandal, 4th Lane, Dhulia (Maharashtra).

21. Prof. Satish Chandra, Secretary, Indian History Congress, C/o Centre for Historical Studies, Jawaharlal Nehru University, New Mehrauli Road, New Delhi-57.

22. Prof. Barun De, Senior Professor of Social and Economic History, Indian Institute of Management, 56-A, B.T. Road, Calcutta-50.

23. Dr. V. G. Dighe, The Asiatic Society of Bombay, (Town Hall), Bombay-1.

24. Prof. Tridib Nath Roy, Bangiya Sahitya Parishad, 243/1, Acharya Prafulla Chandra Road, Calcutta-6.

25. Dr. (Miss) H. K. Naqvi, Visiting Fellow, Indian Institute of Advanced Study, Rashtrapati Nivas, Simla-5 (H.P.).

P. SOMASEKHARAN, Dy. Secy.

New Delhi, the 27th November 1972

No. F. 22-5/72-*CAI*(2).—In pursuance of para 3-IV(1) of the Government of India, Department of Culture Resolution No. 22-7/69-CAI(2), dated the 10th March, 1972, regarding constitution of a Standing Committee of the Indian Historical Records Commission, the following persons are appointed to serve on the Standing Committee for a period of two years :

Chairman (Ex-Officio)

1. Secretary to the Government of India, Ministry of Education and Social Welfare (Department of Culture), New Delhi.

Members

2. Prof. N. R. Ray, 57, Lodi Estate, New Delhi-3.

3. Prof. Satish Chandra, Secretary, Indian History Congress, C/O Centre for Historical Studies, Jawaharlal Nehru University, New Mehrauli Road, New Delhi-57.

4. Prof. Sheik Ali, Head of the Department of History, Mysore University, Mansa Gangotri, Mysore-6.

5. Prof. O. P. Bhatnagar, 4-D, Bank Road, Allahabad-2.

6. Shri V. G. Khobrekar, Director of Archives and Archaeology, Government of Maharashtra, Bombay-32 (B.R.).

Secretary (Ex-Officio)

7. Director of Archives, National Archives of India, New Delhi.

A. S. TALWAR, Under Secy.

MINISTRY OF IRRIGATION AND POWER

New Delhi, the 28th November 1972

RESOLUTION

No. EL.II-1(3)/72.—In this Ministry's Resolution No. EL.II-1(3)/72, dated the 20th September, 1972, the following paragraph may be *added*:

"3. The members of the Committee will draw travelling allowance and daily allowance for attending the meetings of the Committee at the rates fixed by the Government from time to time."

ORDER

ORDERED that copies of the Resolution may be sent to all the State Governments, Union Territories and State Electricity Boards for giving wide publicity.

Also ordered that the Resolution be published in the Gazette of India.

S. N. VINZE, Jt. Secy.

MINISTRY OF LABOUR AND REHABILITATION

(Department of Labour and Employment)

New Delhi, PIN 110001, *the 23rd November* 1972

RESOLUTION

No. DGET-200(11)/72-*EEI(i)*.—The term of the Committee set up by the Government of India Resolution No. MP-10(110)/69, dated the 19th December, 1970, published in the Gazette of India Extraordinary Part-I, Section I, dated the 19th December, 1970, and extended upto 31st October, 1972 *vide* Resolution No. EEI-200/3/71 dated the 20th December, 1971, is hereby further extended upto the 28th February, 1973.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India, Part-I, Section-I.

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all Ministries/Departments of the Government of India, State Governments/Union Territories and all others concerned.

P. M. NAYAK, Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1972